



राष्ट्रपति से मिलने के लिए INDIA गठबंधन के सांसदों ने मांगा समय, SIR के मुद्दे पर करना चाहते हैं बात

नई दिल्ली, 08 अक्टूबर। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) समेत चुनाव प्रक्रिया से जुड़े मुद्दों को लेकर INDIA गठबंधन के सांसद राष्ट्रपति द्वीपदी मुर्मू से मिलने की तैयारी में हैं। गठबंधन की ओर से राष्ट्रपति भवन से मुलाकात का समय मांगा गया है, लेकिन गुरुवार शाम तक उन्हें मिलने का समय नहीं मिला था। सूत्रों के मुताबिक, विपक्षी सांसद शुक्रवार तक राष्ट्रपति भवन के जवाब का इंतजार करेंगे। अगर मुलाकात का समय नहीं मिलता है तो आगे की बातचीत पर फैसला लिया जा सकता है। कांग्रेस महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल ने गुरुवार को बताया कि INDIA गठबंधन की ओर से राष्ट्रपति से मिलने के लिए दो

बार अनुरोध किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि पहला अनुरोध पत्र 2 अक्टूबर को राष्ट्रपति भवन भेजा गया था। इसके बाद राष्ट्रपति भवन कार्यालय की ओर से मुलाकात में शामिल होने वाले नेताओं के नाम मांगे गए। इसके बाद गठबंधन ने 5 अक्टूबर को दोबारा पत्र भेजकर मुलाकात में शामिल होने वाले INDIA गठबंधन के नेताओं के नाम भी दे दिए। वेणुगोपाल के मुताबिक, गठबंधन ने 7, 8 या 9 अक्टूबर में से किसी दिन राष्ट्रपति से मिलने का समय मांगा था। गुरुवार तक राष्ट्रपति भवन की ओर से कोई जवाब नहीं आया था। उन्होंने कहा कि गठबंधन शुक्रवार तक इंतजार करेगा। विपक्षी दल चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली, SIR और मतदाता अधिकारों से जुड़े अपने सवाल राष्ट्रपति के सामने



रखना चाहते हैं। INDIA गठबंधन के सांसद पिछले कुछ दिनों से दिल्ली में इन मुद्दों को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं। गठबंधन की ओर से मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग भी की जा रही है। गठबंधन की बैठक में पहले ही यह तय किया गया था कि विपक्षी नेता राष्ट्रपति से मुलाकात कर चुनाव प्रक्रिया और रक्त से जुड़े मुद्दों पर अपना पक्ष रखेंगे। इसके बाद राष्ट्रपति भवन से

मुलाकात का समय लेने की प्रक्रिया शुरू की गई थी। सूत्रों के मुताबिक, INDIA गठबंधन की बैठकों में कुछ नेताओं ने राष्ट्रपति भवन से मुलाकात का समय मिलने को लेकर अपने पुराने अनुभव भी साझा किए। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कथित तौर पर बताया कि पहले भी कई मौकों पर राष्ट्रपति भवन से मुलाकात के लिए समय मांगा गया था, लेकिन उन्हें समय नहीं

मिल पाया। तृणमूल कांग्रेस की ओर से भी इसी तरह की बात बैठक में रखे जाने की जानकारी सूत्रों ने दी। हालांकि, गुरुवार को वेणुगोपाल ने साफ किया कि गठबंधन की ओर से इस बार औपचारिक रूप से दो अनुरोध भेजे जा चुके हैं और दोनों में मुलाकात के लिए नेताओं के नाम भी उपलब्ध कराए गए हैं।

राष्ट्रपति से मुलाकात के लिए गठबंधन ने 9 अक्टूबर तक का समय मांगा है। ऐसे में शुक्रवार को राष्ट्रपति भवन से जवाब मिलने पर आगे की रणनीति तय होने की संभावना है। सूत्रों के मुताबिक, अगर शुक्रवार तक भी मुलाकात का समय नहीं मिलता है तो विपक्षी सांसद राष्ट्रपति भवन जाने या इस मुद्दे पर आगे की कार्रवाई को लेकर फैसला कर सकते हैं।

धर्मांतरण, लव जिहाद और 'लैंड जिहाद' नहीं होने देंगे: शुभेंद्रु अधिकारी

मालदा, 08 अक्टूबर। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंद्रु अधिकारी ने बृहस्पतिवार को कहा कि उनके कार्यकाल में राज्य में धर्मांतरण, लव जिहाद और 'लैंड जिहाद' नहीं होने दिया जाएगा। मुस्लिम बहुल मालदा में एक राहत वितरण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अधिकारी ने कहा कि अतीत में जिले के कालियाचक इलाके में धर्म परिवर्तन की घटनाएं हुई थीं, लेकिन इसे दोहराया नहीं जाना चाहिए। अधिकारी ने कहा, अगर मेरे कार्यकाल में ऐसा होता है, तो मुझे बुरा कोई नहीं होगा। मैं आपसे कह रहा हूँ कि अब कहीं भी कोई धर्म परिवर्तन नहीं होना चाहिए। जब तक मैं जीवित हूँ, मैं मोथाबाड़ी और कालियाचक (जैसी घटनाओं को दोबारा) नहीं होने दूंगा। बांग्लादेश की सीमा से लगे इस जिले के मोथाबाड़ी में 2023 में दो भाइयों के जबरन धर्मांतरण का आरोप लगाते हुए एक मामला दर्ज किया गया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि वहां



सांप्रदायिक दंगे हुए थे जिनमें हिंदुओं को सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा था। अधिकारी ने कहा, लव जिहाद और लैंड जिहाद को रोका जाएगा। हमने बीएसएफ को जमीन दे दी है। एक मक्खी को भी घुसने नहीं दिया जाएगा। पश्चिम बंगाल सरकार ने मई में मालदा सहित कई जिलों में कंटीले तारों की बाड़ लगाने और सीमा चौकी के लिए 142.79 एकड़ जमीन बीएसएफ को हस्तांतरित की है। नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) पर अधिकारी ने कहा कि आवेदकों को अब प्रमाणपत्र के लिए दूसरों के पास जाने की जरूरत नहीं

होगी, क्योंकि केंद्र ने राज्य को इन्हें जारी करने की शक्ति दे दी है। उन्होंने कहा, हम सुनवाई करेंगे और प्रमाणपत्र देंगे। जिन लोगों ने आवेदन नहीं किया है, उन्हें जल्दी करना चाहिए। जिन लोगों को पहले ही प्रमाणपत्र मिल चुके हैं, उन्हें मतदाता सूची में जोड़ा जाएगा, और उनमें से जो लोग अनुसूचित जातियों से संबंधित हैं, उन्हें उनके जाति प्रमाणपत्र भी मिलेंगे। मुख्यमंत्री ने सभी से पश्चिम बंगाल पशु वध नियंत्रण अधिनियम, 1950 का सख्ती से पालन करने को भी कहा। अधिकारी ने कहा कि मालदा को नशा मुक्त बनाने और बाल विवाह रोकने के लिए भी राज्य सरकार काम करेगी। उन्होंने कहा, जो लोग स्कूलों और मदरसों में कक्षाओं की शुरूआत से पहले पूरा बंद मातम गायें, वो मेरे दोस्त होंगे। अधिकारी ने यह भी घोषणा की कि किसानों का समर्थन करने के लिए एक किसान विकास बोर्ड का गठन किया जाएगा।

राहुल गांधी के प्रदर्शन का समर्थन करने पर घिरे सीएम वीडी सतीसन, केरल बीजेपी ने मांगा इस्तीफा

केरल, 08 अक्टूबर। केरल बीजेपी के उपाध्यक्ष शोण जॉर्ज ने गुरुवार को मुख्यमंत्री वीडी सतीसन के इस्तीफे की मांग की। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस नेता ने खुद माना है कि राज्य में हुए विधानसभा चुनाव गैर-कानूनी थे। उन्होंने पत्रकारों से कहा केरल के सीएम और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि चुनाव गैर-कानूनी थे। केरल बीजेपी की ओर से, मैं सीएम से तुरंत इस्तीफा देने का आग्रह करता हूँ। उन्होंने कहा चूंकि वे खुद मानते हैं कि चार महीने पहले केरल में हुए चुनाव गैर-कानूनी थे, इसलिए उन्हें मुख्यमंत्री का पद संभालने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए, केरल बीजेपी मुख्यमंत्री से पद से इस्तीफा देने और विधानसभा भंग करने की मांग करती है। जॉर्ज की यह टिप्पणी सतीसन के उस एक्स पोस्ट के बाद



आई है, जिसमें उन्होंने मंगलवार को चुनावी प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं के खिलाफ राहुल गांधी के विरोध का समर्थन किया और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की। सतीसन ने कहा कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव लोकतंत्र की जान हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि देश की चुनावी प्रक्रिया को कमजोर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड़ा एक लोकतांत्रिक संघर्ष के तहत दिल्ली की सड़कों पर उतरे हैं। सतीसन ने

भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की इस बात का भी जिक्र किया कि सुप्रीम कोर्ट ने 'फॉर्म 6' में किसी बदलाव का निर्देश नहीं दिया था। उन्होंने कहा कि इससे राहुल गांधी की इस बात को बल मिलता है कि भारत की चुनावी प्रक्रिया में हेर-फेर की जा रही है। सतीसन ने कहा मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे के अलावा कोई और रास्ता नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि केरल इस लोकतांत्रिक संघर्ष को अपना पूरा समर्थन देता है। सतीसन ने मंगलवार को दिल्ली में ज्ञानेश कुमार के खिलाफ INDIA गठबंधन के विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया था। उन्हें, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड़ा के साथ, रिहा किए जाने से पहले लगभग दो घंटे तक हिरासत में रखा गया था।

काशी से युवाओं को नबीन का मंत्र-नौकरी मांगने वाले नहीं, नौकरी देने वाले बनें

सुरेश गांधी वाराणसी। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने गुरुवार को काशी से युवाओं को विकसित भारत के निर्माण का संकल्प दिलाते हुए कहा कि आज की पीढ़ी परिवर्तन की वाहक है। उसकी बात सुनना और उसकी ऊर्जा को सही दिशा देना जरूरी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2047 तक भारत को विकसित और विश्वगुरु बनाने के विराट संकल्प में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने युवाओं से जीवन में शॉर्टकट से बचने और लक्ष्य के प्रति 100 फीसदी समर्पण का आह्वान किया। महामाना मदन मोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान में आयोजित युवा संवाद में नबीन ने कहा कि स्टार्टअप, आईटी, एआई, सेमीकंडक्टर, मेडिकल शिक्षा और इंफ्रास्ट्रक्चर में तेजी से अवसर बढ़े हैं। स्टार्टअप संस्कृति ने युवाओं को नौकरी तलाशने से आगे बढ़कर रोजगार देने वाला बनाया है।



काशी को आईटी हब बनाने के सुझाव सरकार तक पहुंचाने की बात भी उन्होंने कही। उन्होंने कहा कि बनारस टेक्स्टाइल हब बनने की दिशा में भी आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के युवाओं का ब्रह्मोस मिसाइल निर्माण में योगदान गर्व की बात है। जिस प्रदेश में कभी माफिया की चर्चा होती थी, वहां

आज एक्सप्रेसवे और डिफेंस कारिडोर की चर्चा है। भारत की सड़क, रक्षा और तकनीकी ताकत लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि देश ने 2047 तक विकसित भारत का साझा सपना देखा है और सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मंत्र से इसे साकार किया जाएगा। नबीन ने

विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा कार्यकर्ता 24 घंटे जनता के बीच रहता है, जबकि राहुल गांधी और विपक्ष चुनाव के समय सक्रिय होते हैं। उन्होंने चुनाव आयोग पर सवाल उठाने को लेकर विपक्ष को घेरा। घुसपैठ के मुद्दे पर कहा कि भारत की भूमि, संसाधन और संपदा पर भारतीयों का अधिकार है और घुसपैठियों को संरक्षण देने की कोशिशों के खिलाफ भाजपा मजबूती से लड़ेगी। काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन के बाद नबीन ने कहा कि बाबा की नगरी में आकर हर व्यक्ति नतमस्तक हो जाता है। काशी विश्वनाथ धाम के भव्य पुनर्निर्माण की सरहना करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बधाई दी। इसी क्रम में होटल ताज में सेवा संकल्प ट्रॉफी का अनावरण कर नबीन ने वाराणसी में प्रस्तावित टी-20 राष्ट्रीय दिव्यांग क्रिकेट प्रतियोगिता को नई ऊर्जा दी। सिगरा

स्टेडियम में होने वाली प्रतियोगिता में विभिन्न राज्य की दिव्यांग क्रिकेट टीमों हिस्सा लेंगी। नबीन ने कहा, दिव्यांगता मन की होती है, शरीर की नहीं। अवसर और उचित मंच मिले तो दिव्यांग खिलाड़ी अपनी प्रतिभा से देश-दुनिया में पहचान बना सकते हैं। खेल आत्मविश्वास, अनुशासन और संघर्ष की भावना मजबूत करता है। ऐसे आयोजन समावेशी भारत का संदेश भी देते हैं। आयोजन समिति अध्यक्ष सिद्धार्थ सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता का उद्देश्य खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाना और उन्हें राष्ट्रीय पहचान का मंच देना है। ऑल इंडिया दिव्यांग क्रिकेट एसोसिएशन अध्यक्ष डॉ. उमम ओझा ने प्रतियोगिता की रूपरेखा राष्ट्रीय अध्यक्ष के सामने रखी। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष चौधरी केतरीय राज्यमंत्री पंकज वैधवी, संस्थान निदेशक डॉ. नागेंद्र कुमार सिंह समेत बड़ी संख्या में पदाधिकारी, युवा प्रतिनिधि और गणमान्य लोग मौजूद रहे।

सीईसी ज्ञानेश कुमार के खिलाफ असम में कांग्रेस का विरोध प्रदर्शन

गुवाहाटी। कांग्रेस की असम इकाई के सदस्यों ने बृहस्पतिवार को नयी दिल्ली में मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर निकाले गए मार्च के दौरान विपक्षी सांसदों के साथ कथित पुलिस दुर्व्यवहार और हिरासत में लिए जाने के खिलाफ गुवाहाटी समेत राज्यभर में प्रदर्शन किए। प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष रिपुन बोरा और असम प्रदेश महिला कांग्रेस अध्यक्ष मीरा बोरठाकुर गोस्वामी समेत कई वरिष्ठ नेताओं को यहां प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय के बाहर उस समय पुलिस ने हिरासत में ले लिया, जब उन्होंने प्रदर्शन मार्च निकालने के लिए अवरोधक तोड़ दिए। कांग्रेस के एक नेता ने दावा किया कि राज्यसभा के पूर्व सदस्य बोरा (70) पुलिस के साथ हुई झड़प में घायल हो गए और उनके पैर में टाँके लगाने पड़े। राजीव भवन में



प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे बोरा ने कहा कि कांग्रेस भाजपा नीत सरकार के इशारे पर सीईसी द्वारा कथित तौर पर मतदाताओं के नाम अवैध रूप से हटाए जाने के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखेगी। वहीं, कांग्रेस की त्रिपुरा इकाई ने एसआईआर के माध्यम से मतदाता सूची में से 13 करोड़ मतदाताओं के नाम हटाने के मामले में कथित भूमिका को लेकर मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईसी) ज्ञानेश कुमार की तत्काल गिरफ्तारी की मांग को लेकर बृहस्पतिवार को यहां एक विरोध रैली निकाली।

दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर का गोवा स्थित घर में 75 वर्ष की उम्र में निधन

पणजी, 08 अक्टूबर। गैर-पारंपरिक, जटिल, संजीदा और विविध... कई विशेषण, एक शख्सियत-नाना पाटेकर। ये विशेषण नाना पाटेकर के व्यक्तित्व का जितना वर्णन करते हैं, उतना ही उस अभिनेता की पढ़ पर साफ नजर आने वाली संजीदगी के बारे में भी बताते हैं। क्रांतिवीर, परिदा, यशवंत, अब तक छपन और वेलकम जैसी

फिल्मों में अलग-अलग विधाओं को साधते हुए पाटेकर ने स्टारडम को छुआ जरूर, लेकिन कभी पूरी तरह उसके वश में नहीं हुए। शायद उनके लिए मिलने वाली भूमिकाओं की असाधारण विविधता ही काफी थी। फिल्म उद्योग में, जहां कूटनीति को जरूरी हुनर माना जाता है, पाटेकर अपनी बेबाकी और दो-टुक अंदाज के लिए जाने जाते थे।

75 वर्षीय अभिनेता का बृहस्पतिवार को गोवा स्थित उनके घर में निधन हो गया।

अपने निधन से महज चार दिन पहले पणजी के पास समुद्र तटीय इलाके डॉनर पाउला में एक कार्यक्रम में पाटेकर ने कहा था, हम सभी को एक दिन जाना है। मुझे नहीं पता कि मैं कल यहां रहूंगा या नहीं। हर किसी के जीवन में वह समय आता है।



लेकिन उससे पहले हमें सोचना चाहिए... क्या मैं वह कर पा रहा हूँ जो मैं करना चाहता हूँ? उनके ये शब्द अब भविष्यवाणी जैसे लगते हैं और उनके जीवन के दर्शन को भी प्रतिबिंबित करते हैं। पाटेकर का जीवन उतार-चढ़ाव से भरा रहा। 2018 में अभिनेत्री तनुश्री दत्ता ने उन पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए थे। इस विवाद ने भारत में मीडा आंदोलन को गति देने में भूमिका निभाई। पाटेकर ने आरोपों से इनकार किया था। पिता का कारोबार डूबने के बाद किशोरावस्था में ही वह परिवार का भरण-पोषण करने लगे थे। स्कूल के दिनों में ही उन्हें रंगमंच से लगाव हो गया और फिल्मों ने

इसके बाद सिंहासन, गिद्ध, आज की आवाज, अंकुश और प्रतिघात जैसी फिल्मों में उन्होंने काम किया। 1988 में मीरा नायर की सलाम बॉम्बे में स्थानीय गुंडे और ड्रग डीलर की भूमिका ने उन्हें व्यापक पहचान दिलाई। ऑस्कर के लिए नामांकित इस फिल्म ने उन्हें समीक्षकों द्वारा प्रशंसित अभिनेताओं की अग्रिम पंक्ति में पहुंचा दिया। 1990 में विधु विनोद चोपड़ा की परिदा में उन्होंने मुख्य खलनायक अन्ना की भूमिका निभाई। उनके शांत लेकिन खोफनाक अंदाज में निभाए गए इस किरदार के लिए उन्हें अपना पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। 1994 की हिट फिल्म क्रांतिवीर में स्वतंत्रता सेनानी के भटके हुए बेटे की भूमिका के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का दूसरा राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। फिल्म में उनका किरदार बाद में गरीबों के अधिकारों के लिए लड़ने वाला व्यक्ति बन जाता है। 1996 की अग्नि साक्षी में एक हिंसक और पीछ

TIWARI'S SARASWATI CLASSES
— Since 1992 —
Parents' First Choice for 34+ Years
Prof. Dr. Dayanand Tiwari
Founder & Academic Director

ADMISSIONS OPEN
9th | 10th | 11th | 12th SCIENCE
NEET | JEE | MHT-CET
10 Days FREE DEMO
Attend Classes • Experience Our Teaching
Take Admission After Satisfaction
(No Hidden Conditions)

✓ 34+ Years of Academic Excellence

✓ Experienced & Dedicated Faculty

✓ Personal Attention

✓ Printed Notes & Regular Tests

✓ Strong Foundation for Boards & Competitive Exams

Santacruz Branch
101 Sai Chambers,
Opp. Santacruz Railway Station (East),
Near Depot, Santacruz (E), Mumbai 400055

Sion Branch
Opp. SIES College (Old),
Near Gुरुप्रिया Hotel,
Sion (West), Mumbai

Limited Seats / Small Batch Size

CALL NOW:
7738007373

DAKS REHAB CENTRE
(PARALYSIS PHYSIOTHERAPY CENTER AND OLD AGE HOME)
Contact us: 9820519851
विल्डिंग नंबर 3, फ्लॉट नंबर 3, आदर्श घरकुल सोसायटी सायन कोलीवाडा जीटीवी नगर मुंबई-37

- * Stroke/Paralysis/Complete Rehab Centre
- * बाहर से आये रोगी और उनके परिजनों के ठहरने कि व्यवस्था
- * वृद्ध लोगों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध
- * DM/HT/THYROID इन सब से कैसे बचें
- * NGO में मिलनेवाली सहायता को लोगों में देना
- * चिकित्सा उपकरणों को किराये और बिक्री सुविधा उपलब्ध
- * एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध
- * पोस्ट ऑपरेटिव रिहैब सेंटर
- * मरीजों के लिए घर पर 12 और 24 घंटे जीडीए परिचारक
- * विशेषज्ञ डॉक्टरों से ऑनलाइन और ऑफलाइन परामर्श की सुविधा उपलब्ध
- * मासिक ईएमआई के आधार पर व्यक्तियों, परिवारों और माता-पिता के लिए स्वास्थ्य निती की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध

Multi Solutions

WHAT WE DO ?

COMPUTER & CCTV

- Laptop, Desktop, CCTV, Sales Service & Rental
- Networking
- Software Installation
- Data Recovery
- Antivirus

SMART AUTOMATION

- Automation
- Biometric
- Smart Home App Control
- All Type of Electric Work

Shop No13, First Floor, Zahoor Nagar, Mustafa Market, Near Behmani Hotel, Kherani Road, Sakinaka, Andheri (E), Mumbai - 400072.
Mithun Prajapati
+91 9220 555 717

नाना पाटेकर: अभिनय की आग में तपा असाधारण कलाकार



–ललित गर्ग

भारतीय सिनेमा में कुछ कलाकार ऐसे होते हैं, जिन्हें केवल अभिनेता कहना उनके व्यक्तित्व को सीमित कर देना है। नाना पाटेकर उन्हीं विलर कलाकारों में से एक थे। वे अभिनेता थे, रंगकर्मी थे, निर्देशक थे, लेखक थे, सामाजिक सरोकारों से जुड़े संवेदनशील नागरिक थे और भारतीय सेना के प्रति गहरे सम्मान एवं सम्पण का उदाहरण भी थे। उनकी आवाज में खुरदुरापन था, संवादों में भार था, आँखों में आक्रोश और चेहरे पर जीवन के संघर्षों की सच्चाई। उन्होंने अभिनय को सजावटी कला नहीं बनाया, बल्कि उसे यथार्थ जीवन के अनुभवों, पीड़ा, संघर्ष, संवेदना और सामाजिक चेतना से जोड़ा। 8 अक्टूबर 2026 को 75 वर्ष की उम्र में उनके निधन के साथ भारतीय सिनेमा ने एक ऐसा कलाकार खो दिया, जिसकी कोई दूसरी प्रतिकृति संभव नहीं है। वे अभिनय जगत के लिये एक अपरिहार्य नाम थे और ज्यादातर फिल्मप्रेमियों के लिये अजीज भी थे।

नाना की फिल्म-प्रतिभा हमें चौंकाती रही है, रोमांचित करती रही है, उकसाती रही है, क्योंकि उनकी फिल्मों की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वे आम लोगों के जीवन की सच्चाई और उनके संघर्षों को प्रामाणिकता एवं जीवंतता के साथ प्रस्तुत करते रहे हैं। भारतीय जिंदगी के रंग-बेशुमार हैं, कला-संस्कृति की अविस्मरणीय धाराएँ हैं, अनूठा एवं बेजोड़ इतिहास और उसकी कहानियाँ भी अनंत-अव्हाह। नाना का फिल्मी-युग भारत की खिड़की से विश्व को देखने एवं विश्व को भारत दिखाने की पहल का एक स्वर्णिम युग है। उन्होंने अपने किरदार से राष्ट्रीयता की भावना को भी सुहृद किया। नाना का सफरनामा पूरी तरह मायूस हो चुके किसी भी इंसान के लिये प्रेरणादायी अध्याय भी है, उस्ताह की मिसाल भी है। नाना पाटेकर का वास्तविक नाम विश्वनाथ पाटेकर था। उनका जन्म 1 जनवरी 1951 को महाराष्ट्र के मुरुड-जंजीरा में हुआ। बचपन सामान्य था, लेकिन किशोरावस्था में ही परिवार आर्थिक संकट में घिर गया। पिता का कारोबार डूब गया और महज 13 वर्ष की उम्र में नाना को परिवार की मदद के लिए काम करना पड़ा। वे स्कूल के बाद



मुंबई में फिल्म पोस्टर रंगते थे और करीब 35 रुपये महीने कमाते थे। काम पर जाने के लिए उन्हें कई इन्फ्लेमेट्री पैदल चलना पड़ता था और बदले में एक वक्त का भोजन भी मिलता था। गरीबों और अभाव ने उन्हें तोड़ा नहीं, बल्कि भीतर से गढ़ा। बाद में उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि भूख और अग्रमान ने उन्हें जीवन को समझना सिखाया। कला नाना के जीवन में आरंभ से थी। उन्होंने सर जे.जे. इंस्टीट्यूट ऑफ एंग्लाइड आर्ट में शिक्षा ली और व्यावसायिक फिल्मों के रूप में काम किया। लेकिन उनका वास्तविक विद्यालय था रंगमंच। मराठी रंगमंच की प्रख्यात निर्देशिका विजया मेहता के मार्गदर्शन में उन्होंने अभिनय की बारीकियाँ सीखीं। हमीदाबाईची कोठी जैसे नाटकों ने उन्हें गंभीर रंगकर्मी के रूप में पहचान दी। रंगमंच ने उन्हें संवाद बोलने की नहीं, बल्कि संवाद के पीछे छिपी भावना को जीना सिखाया। नाना के करीबन सभी शुरूआत फिल्म गमन से हुई थी लेकिन इंडस्ट्री में उन्हें फिल्म परिंदा से नोटिस किया गया जिसमें उन्होंने खलनायक की भूमिका अदा की थी। इस फिल्म में उनके अभिनय के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार भी दिया गया। इसके बाद उन्होंने कई अच्छी फिल्मों में काम किया और अपने अभिनय का लोहा मनवाया। क्रांतिवीर, खामोशी, यशवंत, अब तक छप्पन, अपहरण, वेलकम, राजनीति उनकी प्रमुख फिल्मों में से एक हैं। शुरूआती वर्षों की निराशाओं के बावजूद उन्होंने अपनी राह नहीं छोड़ी। अंकुश और सलाम बॉम्बे ! जैसी फिल्मों ने उनकी प्रतिभा को पहचान दियाई।

इसके बाद नाना पाटेकर ने एक के बाद एक ऐसे किरदार निभाए, जिन्होंने हिंदी सिनेमा में अभिनय की एक अलग भाषा निर्मित की। अंगार में उनका नकारात्मक किरदार, तिरंगा में देशभक्ति से ओतप्रोत शिवाजी राव वागले, क्रांतिवीर में प्रखर और विद्रोही प्रताप नारायण तिलक, अग्निसाक्षी में जटिल मानसिकता वाला पात्र और खामोशी: द म्यूजिकल में संवेदनशील पिता-हर भूमिका में वे बिल्कुल अलग दिखाई दिए। क्रांतिवीर के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला, जबकि अग्निसाक्षी के लिए फिर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित हुए। इस तरह वे तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार पाते वाले विशिष्ट अभिनेताओं में शामिल हुए। नाना की अभिनयशैली का सबसे बड़ा गुण था स्वाभाविकता के भीतर तीव्रता। वे संवाद को केवल बोलते नहीं थे, उसे जीते थे। उनकी आवाज कभी धीमी फुफ्फुसाएट बन जाती तो कभी विस्फोट की तरह फूटती। उनका चेहरा, आँखों की हरकत, हाथों का इस्तेमाल, अचानक आने वाला ठहराव और फिर तेज गति से निकलते संवाद-इन समकाल अपना नाटकीय व्याकरण था। उनकी संवाद-अदायगी इतनी विशिष्ट थी कि साधारण वाक्य भी उनके मुंह से निकलकर यादगार बन जाता था। वे संवादों को अभिनय से बड़ा नहीं होने देते थे, बल्कि अभिनय के माध्यम से संवाद को गर्मी देते थे। नाना की लोकप्रियता का एक अलग अध्याय हवालेबलमहू है। गंभीर और आक्रामक भूमिकाओं के लिए प्यार करने वाले नाना ने उदय शेंडुगे के रूप में ऐसी कामेडी की कि नई पीढ़ी भी उनकी मुरीद हो गई। उनका हूंकट्रोल, उदय, कंट्रोल !हू जैसे संवाद और चेहरे के हावभाव आज भी लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा हैं। यह उनकी अभिनय-बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण था, कि वो कलाकार परिंदा और क्रांतिवीर में उन्होंने को भीतर तक हिला सकता था, वहीं वेलकम में उन्हें खुलकर हंसा भी सकता था। 2000 के दशक में अब तक छप्पन, अपहरण, शक्ति: द पावर, राजनीति जैसी फिल्मों में उन्होंने उम्र और अनुभव के साथ अपने अभिनय की और गहरा किया। अब तक छप्पन के पुलिस अधिकारी का किरदार हो या राजनीति में टेरेटोरियल संघर्षों के बीच खड़ा चरित्र-नाना हमेशा चरित्र की भीतरी बेचैनी को सामने लाते थे। मराठी सिनेमा में भी उन्होंने अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा। ह्याटसमाट्ट (2016) में रंगमंच के दिग्गज कलाकार की भूमिका उनके करियर की सबसे महत्वपूर्ण प्रस्तुतियों में गिनी जाती है।

नाना केवल अभिनेता बनकर संतुष्ट नहीं थे। द्वाप्रहार: द फाइनल अटैंक का निर्देशन करके उन्होंने यह साबित किया कि उनके भीतर निर्देशक और लेखक भी मौजूद हैं। इस फिल्म की तैयारी के दौरान उन्होंने सेना का कठोर प्रशिक्षण लिया। आगे चलकर उनका भारतीय सेना से संबंध वास्तविक जीवन का हिस्सा बन गया। वे टेरेटोरियल अग्रेसरी में जुड़े और लेफ्टिनेंट कर्नल के मानद पद तक पहुँचे। 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान भी वे सैनिकों के साथ रहे। पदें पर देशभक्ति का अभिनय करने वाले इस कलाकार ने वास्तविक जीवन में भी सैनिकों के बीच जाकर देश के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। उनका राष्ट्रीयता किसी नारी तरह नहीं थी, उसमें कर्तव्य और संवेदना थी। तिरंगा, प्रहार और क्रांतिवीर जैसी फिल्मों में देश, सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी के प्रश्न दिखाई देते हैं। वे देशभक्ति को केवल सीमा पर लड़ने वाले सैनिक की भावना तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि इंसानदारी से अपना काम करना, कमजोर के साथ खड़ा होना और समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाना भी राष्ट्रेस्वा का हिस्सा मानते थे। उनके व्यक्तित्व की दूसरी बड़ी विशेषता थी सादगी और सामाजिक प्रतिबद्धता। महाराष्ट्र के किसानों की समस्याओं और ग्रामीण संकट से वे गहराई से जुड़े। 2015 में उन्होंने अभिनेता मकरंद अनासपुरे के साथ नाम फाउंडेशन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य किसानों और सूखा प्रभावित ग्रामीण परिवारों की सहायता करना था। उन्होंने राहत एवं सामाजिक कार्यों में आर्थिक सहयोग भी किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर के निधन पर शोक व्यक्त किया कि वे एक सच्चे क्रांतिवीर थे जिन्होंने सामाजिक बुराईयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उनकी खामोशी उतनी ही अस्सरदार थी जितनी उनकी दमदार आवाज। उन्होंने हमेशा देश-विरोधी तत्वों पर लगाम लगाने की वकालत की।

नाना पाटेकर की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि उन्होंने स्टार बनने की कोशिश नहीं की, कलाकार बने रहे। वे 'स्लेमर की दुनिया' में रहते हुए भी अपनी जड़ों से कटे नहीं। गरीबी ने उन्हें संवेदनशील बनाया, रंगमंच ने अनुशासन दिया, फिल्मों ने व्यापक पहचान दी, सेना ने राष्ट्रबोध को मजबूत किया और सामाजिक कार्यों ने उनके भीतर के मनुष्य को जीवित रखा। उनके अभिनय की विरासत केवल पुरस्कारों में नहीं, उन पात्रों में है जिन्हें उन्होंने अमर कर दिया। परिंदा का अन्ना, क्रांतिवीर का प्रताप, तिरंगा का शिवाजी राव, अब तक छप्पन का पुलिस अधिकारी, नटसम्राट का गणपत बेलवलकर और वेलकम का उदय शेंडु-ये सभी फिल्मों के अलग-अलग चेहरे हैं, लेकिन इनके पीछे एक ही कलाकार है, जो अभिनय को दिखाता नहीं था, संवेदनशीलता के साथ जीता था। नाना पाटेकर का जीवन हमें यह संदेश देता है कि प्रियता अक्सर की मोहतज नहीं होती। जिस किश्ती ने कभी 35 रुपये महीने के लिए फिल्म पोस्टर रंगे थे, और चलकर तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों और पद्मश्री से सम्मानित हुआ। भारत ने एक अभिनेता खोया है, लेकिन उसकी कला, आवाज, संवाद, संघर्ष और संवेदनशील नागरिक की छवि लंबे समय तक जीवित रहेगी। नाना पाटेकर की सबसे बड़ी फिल्म शाब्द उनका अपना जीवन था-संघर्ष से शुरू हुई, संवेदना से समृद्ध हुई और कर्म की सच्चाई पर समाप्त हुई।

दलगत राजनीति से परे एक सजग नागरिक थे नाना पाटेकर



अशोक भाटिया

भारतीय सिनेमा और सामाजिक चेतना का एक बेहद मुखर, बेबाक और ओजस्वी अध्याय हमेशा के लिए बंद हो गया। दिग्गज अभिनेता और संवेदनशील सामाजिक कार्यकर्ता नाना पाटेकर (विश्वनाथ पाटेकर) का 75 वर्ष की आयु में गोवा स्थित उनके आवास पर कार्डियक अरेस्ट के कारण अचानक निधन हो गया। उनके इस आकस्मिक महाप्रायण से न केवल मनोरंजन जगत स्तब्ध है, बल्कि देश ने एक ऐसा सजग नागरिक और वैचारिक स्तंभ खो दिया है, जिसने कभी भी व्यवस्था के सामने झुकना या सच को छिपाना नहीं सीखा। भारतीय राजनीति और कला के अंतर्संबंधों के इतिहास में नाना पाटेकर का स्थान हमेशा अद्वितीय रहेगा, क्योंकि उन्होंने कभी भी किसी राजनैतिक दल का झंडा थामे बिना, जनता के हितों की निर्भीक वकालत की। उनके निधन के इस शोक संतप्त क्षण में, उनके उस अनोखे और बेबाक राजनीतिक दृष्टिकोण का समग्र विश्लेषण करना आज के दौर के लिए एक आवश्यक वसीयतनामा है।

समकालीन दौर में जब अधिकांश हस्तियां किसी न किसी राजनीतिक खेमे या विचारधारा की सुरक्षित छांव तलाश लेती हैं, नाना पाटेकर पूरी तरह स्वतंत्र, व्यवस्था-उन्मुख, राष्ट्र-केन्द्रित और आम नागरिक की स्पीड से उपजे हुए दर्शन

पर अडिग रहे। उनका राजनीतिक चरित्र किसी पारंपरिक दलीय सांचे में नहीं समा सकता था।

नाना पाटेकर की राजनीतिक सोच का सबसे पहला और बुनियादी नियम था—किसी भी राजनीतिक दल के प्रति स्थायी वफादारी न रखना। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि जिस क्षण एक कलाकार या बुद्धिजीवी किसी दल विशेष की सदस्यता ग्रहण कर लेता है, वह अपनी स्वतंत्र सोचने की और सच को सच कहने की क्षमता को हमेशा के लिए खो देता है। दलीय कार्यकर्ता बनने के बाद व्यक्ति को दल के केंद्रीय नेतृत्व की कमियों पर मौन साधना पड़ती है और उसकी गलतियों की जिम्मेदारी भी अपने कंधों पर ढोनी पड़ती है। नाना पाटेकर ने अपने जीवन में इस आत्मघाती समझौते को कभी स्वीकार नहीं किया।

वर्ष 2014 के आम चुनावों के दौरान जब देश में एक बड़ा वैचारिक बदलाव आ रहा था, तब उन्हें देश के सबसे बड़े राजनीतिक दलों (विशेष रूप से भारतीय जनता पार्टी द्वारा मुंबई से) की ओर से चुनावी मैदान में उतरने के सीधे प्रस्ताव मिले थे। किसी भी सामान्य अभिनेता के लिए संसद पहुंचने का यह एक सुगम मार्ग हो सकता था, लेकिन नाना ने इसे सिरे से ठुकरा दिया। उनका यह निर्णय किसी राजनीतिक उदासीनता का परिणाम नहीं था, बल्कि उनकी उस गहरी आत्म-जागरूकता का प्रमाण था जो उन्हें राजनीति के दुलमुल चरित्र से दूर रखती थी। उन्होंने स्वयं कई मंचों पर स्वीकार किया था कि उनका स्थाव्र अत्यधिक स्पष्टवादी और अल्प-क्रोध वाला है। यदि वे किसी दल में शामिल होते और स्वयं उस दल के शीर्ष नेतृत्व का अहंकार से कोई गलती होती, तो वे चुप नहीं बैठ पाते। वह जानते थे कि समकालीन राजनीति में 'अनुशासन' के नाम पर सत्य की

बलि चढ़ाई जाती है, और वे अपनी आत्मा का सौदा करने के लिए तैयार नहीं थे। नाना पाटेकर की राजनीतिक विचारधारा को 'मुद्दा-आधारित संप्रभुता' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। उन्होंने कभी भी किसी राजनेता या सरकार को 'पूर्ण' रूप से अच्छा' या 'पूर्ण रूप से बुरा' नहीं माना। जब केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने कुछ साहसिक और जनहितैषी कदम उठाए, तो नाना ने सार्वजनिक रूप से उनकी सराहना की। परंतु, इस सराहना को राजनीतिक विश्लेषकों द्वारा उनका 'भगवाकरण' या 'दक्षिणपंथी झुकाव' मान लेना एक बड़ी भूल थी। नाना ने तुरंत स्पष्ट



किया था कि किसी अच्छे कार्य की प्रशंसा करना एक जागरूक नागरिक का कर्तव्य है, न कि किसी पार्टी का कार्यकर्ता बनना।

ठीक इसी तरह, महाराष्ट्र की प्रादेशिक राजनीति में उनके संबंध राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के कद्दावर नेता शरद पवार से लेकर भाजपा के देवेंद्र फडणवीस तक, सभी से बेहद आत्मीय और व्यक्तिगत रहे। वे शरद पवार की राजनीतिक सूझबूझ और चाणक्य नीति के प्रशंसक रहे, तो फडणवीस को अपना व्यक्तिगत मित्र भी मानते थे। लेकिन इन व्यक्तिगत संबंधों का प्रभाव कभी भी उनकी वैचारिक स्वतंत्रता पर नहीं पड़ा। उन्होंने हमेशा नेताओं के काम और उनकी नीतियों के आधार पर अपनी तात्कालिक राय बनाई, न कि उनके दल के नाम पर। आज के ध्रुवीकृत दौर में, जहाँ व्यक्ति को या तो इस पार होना पड़ता है या उस पार, नाना पाटेकर का यह दृष्टिकोण एक दुर्लभ संतुलन प्रस्तुत करता था।

आ गए मेरी मौत का तमाशा देखने?



स्मृति बन गई है। तब शायद अंदाजा नहीं था कि सामने बैठे इस कलाकार की आवाज, उसकी बेबाकी और उसकी आँखों की चमक एक दिन तस्वीरों से निकलकर यादों में इतनी

यदि हम नाना पाटेकर के राजनीतिक दर्शन की वास्तविक आत्मा को खोजना चाहें, तो वह हमें वातानुकूलित स्टूडियो या राजनीतिक रैलियों में नहीं, बल्कि विदर्भ और माठवाड़ा के उन सूखे खेतों में मिलती थी जहाँ भारत का अन्नदाता दम तोड़ रहा था। नाना पाटेकर की राजनीति किताबी सिद्धांतों से नहीं, बल्कि जमीनी हकीकत से उपजी थी। नाना पाटेकर खुद भी बड़े किसान थे और 27 एकड़ के फार्म हाउस में खेती करते थे। जब महाराष्ट्र में किसानों का आत्महत्याएं एक भयावह त्रासदी का रूप ले चुकी थीं और तत्कालीन सरकारें कागजी पैकेजों की घोषणाओं में व्यस्त थीं, तब नाना पाटेकर ने मराठी अभिनेता मकरंद अनासपुरे के साथ मिलकर 'नाम फाउंडेशन' की शुरुआत की थी।

यह कदम केवल एक सामाजिक कार्य नहीं था, बल्कि यह देश की पूरी राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था की विफलता को एक खुली चुनौती थी। उन्होंने सीधे तौर पर राजनेताओं और नौकरशाही के निकम्मेपन को बेनकाब किया। किसानों के मुद्दों पर बोलते हुए उनकी भाषा हमेशा तीखी और आक्रामक रही। किसान आंदोलनों के संदर्भ में उनका यह बयान ऐतिहासिक महत्व रखता है कि रकिसानों को अब सरकारों के सामने भीख मांगने की जरूरत नहीं है, बल्कि उन्हें खुद यह तय करना चाहिए कि देश की सत्ता और कमान किसे सौंपनी है। वह जनता यह विचार यह दशनाते है कि वे उनका को केवल 'वोट बैंक' नहीं, बल्कि व्यवस्था का संप्रभु नियंता मानते थे। उनकी इस सोच ने देश के शोषित वर्ग को अपनी राजनीतिक ताकत पहचानने का हासला दिया।

भारतीय राजनीति का सबसे अंधकारमय पहलू हमेशा से जाति और संप्रदाय के आधार पर होने

वाला ध्रुवीकरण रहा है। नाना पाटेकर ने अपनी पूरी चेतना के साथ इस सामाजिक बुराई पर प्रहार किया। उन्होंने बार-बार युवाओं से अपील की कि वे राजनेताओं के उस जाल में न फंसे जो उन्हें जातियों में बांटकर अपनी रोटियां सेकते हैं। उन्होंने देश के युवाओं को 'भीड़ का हिस्सा' बनने के बजाय 'सोचने वाले नागरिक' बनने की प्रेरणा दी। नाना का मानना ​​था कि जाति आधारित राजनीति देश के विकास की सबसे बड़ी बाधा है। जब नेता विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे बुनियादी मुद्दों से ध्यान भटकने के लिए जाति का कार्ड खेलते हैं, तो एक आम नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह मतदान के गुप्त हाथों पर। ऐसी ताकतों को परास्त करे। उन्होंने फिल्मों में भी (जैसे 'क्रांतिवीर' या 'तिरंगा') और वास्तविक जीवन में भी हमेशा एक अखंड, समतावादी भारतीय समाज की वकालत की। उनकी नजर में राष्ट्र की प्रगति तभी संभव थी जब नागरिक अपनी संकीर्ण पक्षपात से ऊपर उठकर देशहित को सर्वोपरि रखें।

नाना पाटेकर की राजनीतिक सोच केवल घरेलू सीमाओं तक सीमित नहीं थी। भारत-पाकिस्तान संबंधों और सीमा पार से होने वाले तनावों पर भी उनकी एक परिपक्व और मानवीय दृष्टि थी। जहाँ एक ओर वे भारतीय सेना के शौर्य और देश की संप्रभुता के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे—जिसके चलते उन्होंने कारगिल युद्ध के समय अग्रिम मोर्चे पर जाकर सैनिकों का हासला भी बढ़ाया था और टेरेटोरियल आर्मी में उन्हें लेफ्टिनेंट कर्नल की मानद रैंक दी गई थी—वहीं दूसरी ओर वे कला, संस्कृति और राजनीति में बेवजह नफरत फैलाने के सख्त खिलाफ थे। उनका मानना ​​था कि पड़ोसी देशों के साथ दुश्मनी की राजनीति अंततः दोनों तरफ के आम लोगों और गरीबों

का ही नुकसान करती है। वे फिल्में या बयानों के जरिए युद्धोन्माद भड़काने वाले तत्वों के आलोचक थे। उनका यह अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण सह-अस्तित्व, शांति और संवाद की भारतीय कूटनीतिक परंपरा के बिल्कुल अनुकूल था। वे राष्ट्रवाद को एक सकारात्मक ऊर्जा मानते थे, न कि दूसरों के प्रति अंध-नफरत का जरिया।

नाना पाटेकर की राजनीतिक विचारधारा का संक्षेप यही है कि वे 'लोक' के पक्ष में खड़े एक निर्भीक पंथिक थे, जिन्हें 'तंत्र' (व्यवस्था) की कमियों को उजागर करने में कर्ष संकोच नहीं हुआ। उनकी राजनीति संसद की कुर्सियों या मंत्रियों के विशेषाधिकारों की मोहतज नहीं थी। उन्होंने एक कलाकार की सामाजिक जवाबदेही को उस ऊंचाई पर पहुंचाया जहाँ राजनीति स्वयं उनके सामने बौनी नजर आने लगती है। आज जब वे हमारे बीच शारीरिक रूप से मौजूद नहीं हैं, तो पूरी राजनीतिक व्यवस्था चाटुकारिता, दलबदल, अवसरवादिता और वैचारिक शून्यता के जिस दौर से गुजर रही है, उसमें नाना पाटेकर का जीवन और उनके विचार एक प्रकाश स्तंभ की तरह याद किए जाएंगे। उन्होंने एक बार मुस्कराते हुए कहा था कि उन्होंने मरने के लिए सूखी लकड़ियां इकट्ठा कर रखी हैं ताकि धुएं से किसी दोस्त की आंखों में पानी न आए और उन्हें गलतफहमी न हो कि कोई उनके लिए रो रहा है। लेकिन आज उनके जाने पर देश की आंखें वास्तव में नम हैं। वे हमें सिखा गए कि राजनीति में सक्रिय होने के लिए किसी दल का बिल्ला लगाना जरूरी नहीं है; सत्ता की आँखों में आँखें डालकर सच कहना ही सबसे बड़ी देशभक्ति है। भारतीय लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए उनकी यह 'गैर-पक्षपातपूर्ण' और स्वतंत्र विचारधारा हमेशा मार्गदर्शक बनी रहेगी।



–सुरेश गांधी

आ गए मेरी मौत का तमाशा देखने क्रांतिवीर में नाना पाटेकर के मुंह से निकली यह पंक्ति महज फिल्म का संवाद नहीं थी। उसमें व्यवस्था से लड़ने एक आदमी का आक्रोश था, भीतर जमा वर्षों की बेचैनी थी और उस कलाकार की आवाज थी, जो अभिनय करते समय किरदार और खुद के बीच की सारी दीवारें गिरा देता था। विडंबना देखिए—जिस अभिनेता ने पदें पर मौत के सामने खड़े होकर दुनिया को ललकारा, उसकी अपनी जिंदगी की आखिरी पटकथा इतनी खामोश लिखी गई कि गुरुवार की सुबह खबर आई और पूरा देश स्तब्ध रह गया। 8 अक्टूबर की भोर में गोवा स्थित आवास पर 75 वर्षीय नाना पाटेकर ने अंतिम सांस ली। तड़के तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया। चिकित्सकों ने करीब 45 मिनट तक सीपीआर देकर उन्हें बचाया की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। नाना चले गए, लेकिन उनके साथ केवल एक अभिनेता नहीं गया। हिंदी और मराठी सिनेमा की वह आवाज चली गई, जिसे सुनकर पदें पर किरदार नहीं, पूरा समय बोलता था।

नाना पाटेकर का जन्म विश्वनाथ पाटेकर के रूप में महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के मुरुड-जंजीरा में हुआ। जन्म भले 1951 में हुआ, लेकिन उनके व्यक्तित्व की पहली पाठशाला कोई

1978 की गमन से फिल्मों की यात्रा शुरू हुई। आगे अंकुश, प्रतिघात, सलाम बॉम्बे !, परिंदा, क्रांतिवीर, अग्निसाक्षी, तिरंगा, खामोशी, अब तक छप्पन, अपहरण, राजनीति, वेलकम और नटसम्राट तक उन्होंने ऐसा संसार रचा जिसमें खलनायक, पुलिस अधिकारी, देशभक्त, पिता, अपराधी, हास्य चरित्र और टूटता हुआ कलाकार—हर चेहरा अपना लगता था। तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और पद्मश्री उनके खाते में आए, लेकिन नाना की सबसे बड़ी उपलब्धि पुरस्कारों की संख्या नहीं थी। उनकी उपलब्धि यह थी कि कोई भी उनका संवाद किसी दूसरे अभिनेता की आवाज में सोच ही नहीं सकता था। काशी की गलियों में शूटिंग के बीच हुई वह मुलाकात आज एक अनमोल



- राजकुमार जेन, स्वतंत्र लेखक

से अभिनय के उस विरल स्कूल का पद गिर गया है, जहाँ अदकारों किसी सजे-धजाए फामुलें या मीठी मुस्कानों से नहीं, बल्कि जिंदगी की खुरदुरी हकीकत और सीने में सुलगाने का येप होती थी।

1 जनवरी 1951 को मुरुड-जंजीरा के एक सामान्य परिवार में जन्मे नाना का बचपन आभवाों की सबसे कटिन भूमी में तपा था। तेरह वर्ष की उम्र में ही परिवार का

आर्थिक संबल बनने के लिए उन्होंने सड़कों पर जेबरा क्राँसिंग और सिनेमा पोस्टरों को रंगने का काम किया। मुंबई के जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से शिक्षा लेते हुए उन्होंने भूख, तिरस्कार और सामाजिक विमर्श को बहुत नजदीक से झेला। यही वजह रही कि जब वे मराठी रंगमंच से होते हुए 1978 में मुजफ्फर अली की फिल्म 'गमन' के जरिए रूपहले पदें पर आए, तो उनके भीतर का गुस्सा बनावटी नहीं था। 'अंकुश' और 'प्रतिघात' जैसी फिल्मों में उन्होंने व्यवस्था के खिलाफ सड़क पर खड़े आम नौजवान की हताशा को अपनी आँखों और कड़कती आवाज से अमर कर दिया।

फाेना का अभिनय ठहराव और विस्फोट का एक ऐसा अनूठा रसायन था जिस के कभी दोहराया नहीं जा सकता। विधु विनोद चोपड़ा की 'परिंदा' में विक्षिप्त अन्ना सेठ का किरदार हो या 'प्रहार' का वह कठोर

फौजी जो खुद समाज की सड़ांध से लड़ने उतर पड़ता है, नाना ने हर बार अभिनय के स्थापित मानकों को तोड़ा। 1994 की 'क्रांतिवीर' में हिन्दू और मुसलमान के खून को हाथों पर मिलाकर पूजा गया उनका तीखा सवाल आज भी भारतीय जनमानस के कानों में गूँजता है। वहीं 'खामोशी' के मूक-बधिर पिता और मराठी फिल्म 'नटसम्राट' के टूटते हुए रंगकर्मी गणपत बेलवलकर के रूप में उन्होंने यह सिद्ध किया कि वे केवल दहाड़ना ही नहीं जानते, बल्कि आँसुओं की मौन में बदलकर सीने पर पत्थर रख देना भी उनकी कला का हिस्सा था। उनकी कला की कुंज केवल देश तक सीमित नहीं रही, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उन्होंने अमिट छाप छोड़ी। दीपा मेहता की चर्चित फिल्म 'द क्लाउड्स डोर' में उन्हें सशक्त अभिनय को विदेशी समीक्षकों ने सराहा, वहीं कान्स और मॉन्ट्रियल जैसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में उनकी यथार्थवादी फिल्मों ने भारतीय सिनेमा

का मान बढ़ाया। 'द जंगल बुक' के हिंदी रूपांतरण में शेरखान के किरदार को दी गई उनकी खरतारा ढंग से गूँजती आवाज को वैश्विक स्तर पर सराहना मिली।विदेशी फिल्म समीक्षकों ने अक्सर उनकी तुलना हॉलीवुड के अल्पचीने और रॉबर्ट डी नीरो से की, क्योंकि नाना में भी बिना संवाद बोले केवल आँखों और चेहरे के तनाव से दृश्य में भय और ऊर्जा भरने की वही दुर्लभ क्षमता थी। विवादों से भी उनका गहरा नाता रहा, क्योंकि वे कभी अपनी खासियत पर मुबोद्ध चढ़ने के आदी नहीं रहे। उनका बेहद मुखर, बेबाक और कभी-कभी उग्र और समझौता विहीन स्वभाव कई बार उनके सह-कलाकारों व निर्देशकों के साथ टकराव का कारण बना। 'मी टू' आंदोलन के दौरान लगे आरोपों ने उन्हें फिल्म की शूटिंग शहर के करीब 22 स्थानों पर हुई और लगभग 500 स्थानीय कलाकार भी इससे जुड़े। तब नाना ने कहा था कि वह 35 साल बाद बनारस को देखने के लिए उत्साहित हैं

साथ हुई घटना के वायरल होने पर भी उन्हें तीखी आलोचना का सामना करना पड़ा। वे कभी किसी देवता की तरह निर्वेष होने का दावा नहीं करते थे, वे अपनी तमाम मानवीय कमजोरियों, तल्खी और आवेगों के साथ बिल्कुल खुले थे। किंतु नाना पाटेकर केवल पद के नायक नहीं थे। उनका सबसे विराट रूप 'नाम फाउंडेशन' के माध्यम से सामने आया। महाराष्ट्र के विदर्भ और माठवाड़ा में जब किसान सूखे की तार से टूटकर आत्महत्या कर रहे थे, तब नाना ने धूप में उतरकर रदियों को गहरा करवाया, चेकडेम बनवाए और सैकड़ों पीड़ित किसान परिवारों को सीधे आर्थिक सहारा दिया। खड़कवासला के सादे फार्महाउस पर मिट्टी से जुड़े रहकर उन्होंने यह सिखाया कि प्रसिद्धि की कांचचीथ में जकट है। उनकी का कर्ज कैसे चुकाया जाता है। उनमें जाने से सिनेमा ने अपने सबसे प्रखर विद्रोही किरदार को खो दिया है और देश के अन्नदाता ने अपने सबसे सच्चे परदेदार को।

विद्याविहार ईस्ट-वेस्ट पुल का नाम कैप्टन स्मित मच्छर फ्लाईओवर रखने की मांग



मुंबई (उत्तरशक्ति)। बृहन्मुंबई महानगरपालिका द्वारा नवनिर्मित विद्याविहार पूर्व-पश्चिम को जोड़ने वाले पुल का नाम घाटकोपर के सुप्रत्र कैप्टन स्मित मच्छर के नाम पर रखने की मांग घाटकोपर पूर्व विधानसभा के विधायक पराग शाह ने मुंबई मनपा आयुक्त से की है। बता दें कि विद्याविहार पूर्व और पश्चिम क्षेत्र को जोड़ने वाला यह महत्वपूर्ण पुल जल्द ही नागरिकों के लिए खुलने वाला है। इसी पृष्ठभूमि में कैप्टन स्मित मच्छर के साहस और कर्तव्यनिष्ठा को सम्मान देते हुए इस पुल का नाम कैप्टन स्मित मच्छर फ्लाईओवर रखने की मांग की गई है। दुबई से इजरायल की यात्रा के दौरान विमान में उड़ते हुए अत्यंत गंभीर और चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में कैप्टन स्मित मच्छर ने अद्वितीय साहस, सूझबूझ और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया। उनके प्रयासों की वजह से 170 से अधिक यात्रियों की जान बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। उनके इस साहसिक कार्य की देशभर के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना हुई है। उनके साहस और मानवतावादी दृष्टिकोण की स्थायी स्मृति बनाए रखने तथा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देने के उद्देश्य से विद्याविहार ईस्ट-वेस्ट पुल का नाम उनके नाम पर रखने की मांग की गई है। विधायक पराग शाह ने महानगरपालिका आयुक्त से इस प्रस्ताव पर सकारात्मक विचार कर आवश्यक प्रशासनिक कार्यवाही करने का अनुरोध किया है।

अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद के भिवंडी तालुका अध्यक्ष बने संजय जाधव



भिवंडी (उत्तरशक्ति)। अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद के भिवंडी तालुका अध्यक्ष पद पर येवई निवासी सामाजिक कार्यकर्ता संजय जाधव की नियुक्ति की गई है। महाराष्ट्र युवा अध्यक्ष लकीभाऊ जाधव ने येवई में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें नियुक्ति पत्र प्रदान किया। इस अवसर पर कृष्ण कुमार होबरे, शहापुर तालुका कार्याध्यक्ष भरत धोंगडे, सचिन राणे, अशोक बुधर, सुदाम पांगी, राजेश भेकरे, गुरु बारी और हनुमान पांगी सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे। कार्यक्रम में एकनाथ घाटाल को तालुका सचिव तथा संकेत वाडेकर को युवा अध्यक्ष नियुक्त किया गया। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लकीभाऊ जाधव ने आदिवासी समाज के शिक्षा, रोजगार, जमीन, घरकुल, सरकारी योजनाओं और बुनियादी सुविधाओं से जुड़े मुद्दों पर एकजुट होकर काम करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने समाज के नागरिकों की समस्याओं को प्रशासन तक पहुंचाकर उनके समाधान के लिए लगातार प्रयास करने का आह्वान किया। नवनियुक्त पदाधिकारियों ने आदिवासी समाज के न्यायोचित अधिकारों के लिए काम करने तथा गांव से लेकर तालुका स्तर तक संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लिया। संजय जाधव की नियुक्ति से भिवंडी तालुका में आदिवासी समाज के विभिन्न मुद्दों को संगठित रूप से उठाने की उम्मीद जताई जा रही है।

भिवंडी में 14 अक्टूबर को लगेगी महात्मा ज्योतिराव फुले राजस्व लोक अदालत

भिवंडी। महात्मा ज्योतिराव फुले की द्धिशाब्दी जयंती वर्ष के अवसर पर राजस्व विभाग की ओर से 14 अक्टूबर को भिवंडी तहसीलदार कार्यालय में महात्मा ज्योतिराव फुले राजस्व लोक अदालत अभियान आयोजित किया जाएगा। इसके तहत राजस्व संबंधी लंबित शिकायतों और अर्ध-न्यायिक मामलों का आपसी सहमति से निपटारा किया जाएगा। यह जानकारी तहसीलदार अभिजीत खोले ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी।

अभियान के अंतर्गत तहसीलदार न्यायालय में लंबित कुल कानून की धारा 70-ब और 32-ग के मामले, अधिकार अभिलेख संबंधी प्रकरण, मामलेदार न्यायालय अधिनियम के अंतर्गत मामले तथा अन्य लंबित अर्ध-न्यायिक प्रकरणों को शामिल किया गया है। जिन पक्षकारों की आपसी सहमति से विवाद निपटाने की इच्छा है, वे आवश्यक दस्तावेजों के साथ निर्धारित प्रपत्र अ में 14 अक्टूबर तक आवेदन जमा कर सकते हैं। प्राप्त आवेदनों की जांच के बाद नियमानुसार 14 अक्टूबर को आयोजित प्रथम राजस्व लोक अदालत में संबंधित मामलों पर कार्रवाई की जाएगी। तहसीलदार अभिजीत खोले ने संबंधित पक्षकारों से इस अभियान का लाभ उठाने तथा अपने लंबित राजस्व मामलों के निपटारे के लिए आवश्यक दस्तावेजों सहित तहसीलदार कार्यालय से संपर्क करने की अपील की है।

मौसम बदलते ही दांतों में होने वाली संवेदनशीलता जानिए क्या है वजह : डॉ. सोनिया दत्ता

मुंबई/पटना। डॉ. सोनिया दत्ता, एमडीएस, पीएचडी, प्रोफेसर इन पब्लिक हेल्थ डेन्टिस्ट्री के अनुसार कुछ बदलाव इतने धीरे-धीरे आते हैं कि हमें उनका एहसास भी नहीं होता। हवा में हल्की ठंडक घुलने लगती है। सुबह की चाय थोड़ी देर तक गर्म रहती है। कुछ हफ्ते पहले तक जो आइसक्रीम बेहद पसंद थी, वह अब उतनी आकर्षक नहीं लगती। फिर एक दिन, आप कुछ या ठंडा पीते हैं और अचानक एक दांत में तेज झनझनाहट महसूस होती है, ऐसे दांत में, जिसने पहले कभी परेशानी नहीं दी थी। इसे एक मामूली और अस्थायी समस्या समझकर नजरअंदाज करना आसान है। लेकिन कई बार जो एक छोटी-सी मौसमी असुविधा लगती है, वह वास्तव में आपके दांतों का संकेत होता है कि उन्हें थोड़ी अतिरिक्त देखभाल की जरूरत है। डाक्टर रेड टुथपेस्ट में आयुर्वेदिक तत्वों की अच्छाई समाहित है, जैसे लौंग , जिसे पारंपरिक रूप से दांतों के दर्द और असुविधा से राहत दिलाने में सहायक माना जाता है।

उत्तरशक्ति

* संपादक: ओमप्रकाश प्रजापति

* उप संपादक: प्रेम चंद मिश्रा

*प्रबंध संपादक: डा. शेषधर बिन्द

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।

पत्राचार कार्यालय :

उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)

मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन

प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-

337 ट्रक टर्मिनल डब्ल्यू.टी.टी.

रोड, आर.टी.ओ. जबल ऑटफ हिल

वडाला, मुंबई-37

मो.- 9554493941

email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामी: शरद फागुम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल भजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जबल, गेट क्रमांक 2, गोरोगव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुद्रित एवं के-4, रुम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर यु समता सहकारी को.ऑ. हैं.

सांसाईटी, एमएमआरआई कॉलोनी कंजूरगाँव (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरवांई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्राचार कार्यालय: मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रक टर्मिनल, डब्ल्यू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जबल, ऑटफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

पालघर जिला परिषद बनी महाराष्ट्र की पहली स्थानीय स्वराज्य संस्था

♦कागदविरहित बैठक प्रणाली का शुभारंभ, एआई के माध्यम से बैठक से लेकर निर्णयों की अमलदारी तक होगी डिजिटल निगरानी

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। जिला परिषद पालघर के प्रशासनिक कामकाज में डिजिटल परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए कागदविरहित बैठक प्रणाली का शुभारंभ किया गया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज रानडे की अध्यक्षता में 7 अक्टूबर को आयोजित स्थायी समिति की बैठक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) सक्षम इस डिजिटल बैठक प्रबंधन प्रणाली का प्रत्यक्ष उपयोग किया गया। इस तरह की प्रणाली

राहुल इंटरनेशनल स्कूल की नन्ही जास्वीका का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

मुंबई (उत्तरशक्ति)। होनहार बिरवान के होत चिकने पात। अर्थात होनहार या प्रतिभाशाली व्यक्तियों की प्रतिभा और गुण बचपन से ही दिखाई देने लग जाते हैं। देश के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था राहुल एजुकेशन द्वारा संचालित राहुल इंटरनेशनल स्कूल, पुणे में दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली सात साल की नन्ही जास्वीका भारतेश जैन ने इनलाइन स्केटिंग में अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल करते हुए अपना नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराया है।जास्वीका ने यह विश्व रिकॉर्ड इनलाइन स्केट्स पर उल्टे पीछे की तरफ दौड़ने का सबसे तेज 100 मी का स्पर तय करके बनाया है उसने बेहद कठिन और चुनौतीपूर्ण रस को मात्र 17.93 सेकंड में पूरा करके अपना और अपने स्कूल का नाम रोशन किया है। इस नन्ही परी की कमाल की गति और संतुलन को देखकर लोक दंग रह गए। इस एतिहासिक रिकॉर्ड का आयोजन कर्नाटक के बेलगांव स्थित



शिवगंगा के आरएससी ट्रैक पर किया गया। राहुल एजुकेशन के चेयरमैन लल्लन तिवारी ने कहा कि इतनी कम उम्र में जास्वीका ने जो विश्व रिकॉर्ड बनाया है, वह उसकी अटूट मेहनत, लगन और दृढ़ इच्छा शक्ति को दर्शाता है। उसकी इस उपलब्धि से न सिर्फ राहुल एजुकेशन अपितु पूरा देश गौरवान्वित हुआ है। राहुल एजुकेशन के सचिव राहुल तिवारी के अनुसार जास्वीका कि यह उपलब्धि प्रेरणादायक और गौरवपूर्ण है। हम सब को उसे पर गर्व है।

नवयुवक सांस्कृतिक मित्र मंडल के नवरात्र पंडाल का किया गया भूमिपूजन

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। कामधर स्थित ब्रह्मानंद नगर में नवयुवक सांस्कृतिक मित्र मंडल की ओर से आयोजित होने वाले सार्वजनिक नवरात्र उत्सव के भव्य पंडाल का विधिवत भूमिपूजन किया गया।मंडल इस वर्ष अपने उत्सव का 31वां वर्ष मना रहा है।भूमिपूजन कार्यक्रम मंडल की महिला अध्यक्ष एवं पत्रकार नीलम लल्लन तिवारी के हाथों पूजा-अर्चना के साथ संपन्न हुआ। इस दौरान माता रानी से सभी भक्तों के सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की कामना की गई। कार्यक्रम में मंडल के संस्थापक अध्यक्ष भगवानदास गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष गौरव कुमार चौबे, नवनिर्वाचित अध्यक्ष राधेश्याम यादव, उपाध्यक्ष हरिराम नायक, उपाध्यक्ष लवलेख सुतार, कोषाध्यक्ष



जयप्रकाश जैसवाल, रामकुमार मौर्य, दिलीप जैसवाल सहित मंडल के अनेक महिला एवं पुरुष पदाधिकारी तथा सदस्य उपस्थित रहे।मंडल के पदाधिकारियों ने बताया कि पिछले 31 वर्षों से लगातार सार्वजनिक नवरात्र उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य श्रद्धालुओं को एकजुट करने के साथ धार्मिक एवं



स्वचालन और डिजिटल प्रशासन तकनीक का उपयोग कर इसे तैयार किया गया है। कागदविरहित बैठक प्रणाली के माध्यम से बैठक के विषय, विषयपत्रिका, संबंधित दस्तावेज, उपस्थिति, चर्चा, मतदान, प्रस्ताव, निर्णय और कार्यवाही को एक ही डिजिटल मंच पर संचालित किया जा सकेगा। इतना ही नहीं, बैठक से पहले की तैयारी से लेकर बैठक के दौरान की कार्यवाही और

भाजपा रेलवे प्रवासी प्रकोष्ठ महाराष्ट्र की बैठक संपन्न

पालघर सांसद हेमंत विष्णु सावरा ने सुनी यात्रियों की समस्याएं

पालघर(उत्तरशक्ति)। भाजपा रेलवे प्रवासी प्रकोष्ठ, महाराष्ट्र की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें रेलवे यात्रियों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं एवं सुविधाओं को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में पालघर लोकसभा क्षेत्र के सांसद हेमंत विष्णु सावरा ने उपस्थित पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की समस्याएं और सुझाव सुने तथा उनके समाधान के लिए आवश्यक पहल करने का आश्वासन दिया। बैठक के दौरान रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों को होने वाली परेशानियों, यात्री सुविधाओं में सुधार, ट्रेनों के ठहराव, स्वच्छता, सुरक्षा तथा अन्य स्थानीय रेलवे संबंधी मुद्दों पर चर्चा की गई। उपस्थित प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र की समस्याओं से सांसद को अवगत कराया। इस अवसर पर बोईसर रेलवे



स्टेशन सलाहकार तुलसीराम केवट सहित रेलवे प्रवासी प्रकोष्ठ के महाराष्ट्र प्रदेश प्रभारी केलाश वर्मा व अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे। बैठक में यात्रियों की

समस्याओं को संबंधित रेलवे अधिकारियों तक पहुंचाकर उनके शीघ्र निराकरण की दिशा में समन्वित प्रयास करने पर जोर दिया गया। बैठक के माध्यम से रेलवे यात्रियों

की सुविधाओं को बेहतर बनाने तथा स्थानीय स्तर पर सामने आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए संगठन की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने का संकल्प व्यक्त किया गया।

मीरा रोड में 11 से 19 अक्टूबर तक GM नवरात्रि महोत्सव 2026

♦गरबा-डांडिया के लिए मुफ्त प्रवेश; मुख्यमंत्री राहत कोष के स्टॉल से सूखाग्रस्त किसानों की मदद का संकल्प

मीरा-भायंदर (उत्तरशक्ति)।

मीरा-भायंदर में हर वर्ष हजारों गरबा प्रेमियों को आकर्षित करने वाला GM नवरात्रि महोत्सव 2026 इस वर्ष 11 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक मीरा रोड के बेवेली पार्क स्थित नामदार गोखले मैदान में आयोजित किया जाएगा। प्रताप सरनाईक फाउंडेशन और GM की ओर से आयोजित इस महोत्सव में गरबा एवं डांडिया के लिए नागरिकों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा। महोत्सव की तैयारियों, सुरक्षा व्यवस्था, नियोजन और नागरिकों के लिए उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं का जायजा लेने के लिए महाराष्ट्र के परिहदन मंत्री तथा धाराशिव जिले के पालक मंत्री प्रताप सरनाईक ने कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। इसके बाद आयोजित पत्रकार परिषद में उन्होंने महोत्सव की तैयारियों और सामाजिक उपक्रमों की जानकारी दी। दफकोड से निःशुल्क पास की व्यवस्था मंत्री सरनाईक के अनुसार, मीरा-भायंदर को विभिन्न संस्कृतियों के लोगों का शहर माना जाता है। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए नागरिकों पर आर्थिक बोझ न पड़े, इसलिए गरबा और डांडिया कार्यक्रम निःशुल्क रखा गया है। भीड़ प्रबंधन और नागरिकों की सुविधा के लिए आधुनिक दफ कोड प्रणाली के माध्यम से निःशुल्क पास उपलब्ध



कराए जा रहे हैं। सूखाग्रस्त किसानों की मदद के लिए विशेष स्टॉल इस वर्ष नवरात्रि महोत्सव को सामाजिक उपक्रम से भी जोड़ा गया है। महोत्सव परिसर में मुख्यमंत्री राहत कोष से संबंधित विशेष सहायता स्टॉल स्थापित किया जाएगा। इसके माध्यम से इच्छुक नागरिक सूखाग्रस्त क्षेत्रों के किसानों और जरूरतमंदों के लिए आर्थिक अथवा आवश्यक सामग्री के रूप में सहायता कर सकेंगे।

सरनाईक ने बताया कि उनकी ओर से भी सूखाग्रस्त क्षेत्रों के नागरिकों और किसानों की सहायता के लिए 8 से 10 करोड़ रुपये का राहत कोष उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि उत्सव के आनंद के साथ समाज और किसान समुदाय के प्रति जिम्मेदारी निभाना भी आवश्यक है। मैदान को लेकर प्रशासन पर सवाल पत्रकार परिषद के दौरान नवरात्रि उत्सव के लिए मैदान उपलब्ध कराने को लेकर उठे विवाद पर भी सरनाईक ने अपनी भूमिका स्पष्ट की। उन्होंने दावा किया कि पंच भूषण मेजर ध्यानचंद मैदान की बुकिंग आमसभा के प्रस्ताव से एक दिन

पहले किए जाने का मामला सामने आया है।

उनके अनुसार, आयोजक नगर निगम के मैदान निःशुल्क मांगने के बजाय नियमानुसार कियाया देने के लिए तैयार हैं। सरनाईक ने प्रशासन से सवाल किया कि यदि विभिन्न कार्यक्रमों के लिए नियमों के तहत मैदान उपलब्ध कराया जाता है, तो नवरात्रि जैसे धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मामले में अलग व्यवस्था क्यों होनी चाहिए। उन्होंने प्रशासन से सभी आयोजनों के साथ सामान और पारदर्शी व्यवहार करने की मांग की। हालांकि, मैदान की बुकिंग और प्रशासनिक निर्णय से जुड़े इन दावों पर संबंधित नगर निगम प्रशासन का पक्ष सामने आना बाकी है। संस्कृति, मनोरंजन और सामाजिक जिम्मेदारी का संगम सरनाईक ने मीरा-भायंदर के नागरिकों से नवरात्रि महोत्सव में बड़ी संख्या में शामिल होने की अपील की। उन्होंने कहा कि इस वर्ष का आयोजन केवल गरबा और डांडिया तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि संस्कृति, मनोरंजन और सामाजिक जिम्मेदारी को एक साथ जोड़ने का प्रयास किया जाएगा।

क्विक हील फाउंडेशन ने साइबर शिक्षित गांव पहल शुरू की

मुंबई। साइबर सुरक्षा सॉल्यूशंस की प्रमुख वैश्विक प्रदाता क्विक हील टेक्नोलॉजिज लिमिटेड की सीएसआर शाखा, क्विक हील फाउंडेशन ने कोल्हापुर जिले के अजुनी गांव में अपनी महत्वाकांक्षी साइबर शिक्षित गांव पहल की शुरुआत की है। इस दूरदर्शी पहल का मुख्य उद्देश्य अजुनी को 'भारत का पहला साइबर-सुरक्षित गांव' बनाना है। क्विक हील फाउंडेशन के प्रमुख कार्यक्रम साइबर शिक्षा, साइबर सुरक्षा के तहत यह अभियान पारंपरिक जागरूकता से आगे बढ़कर व्यावहारिक डिजिटल सुरक्षा उपायों के जरिए पूरे समुदाय को सुरक्षित बनाने की दिशा में काम करता है। बढ़ती डिजिटल पहुंच के साथ-साथ ऑनलाइन खतरों के प्रति जागरूकता न होने के कारण ग्रामीण

क्षेत्रों में थर्ड-पार्टी ऐस, अनजान लिंक्स और अत्यधिक पेप परमिशन्स के जरिए संवेदनशील डेटा उजागर होने का खतरा बढ़ा है। इस अंतर को मिटाने के लिए साइबर शिक्षित गांव पहल तीन मुख्य स्तंभों – रोकथाम, सुरक्षा और रिपोर्टिंग पर आधारित है। क्विक हील फाउंडेशन की चेयरपर्सन और क्विक हील टेक्नोलॉजीज लिमिटेड की चीफ ऑफ ऑपरेशनल एक्सप्लेंस अनुपमा काटकर ने कहा, डिजिटल पहुंच अवसरों के दरवाजे खोल सकती है, लेकिन इन अवसरों से समुदाय सही मायने में सशक्त तभी होगा, जब लोगों के पास ऑनलाइन सुरक्षित रहने की जानकारी और आत्मविश्वास हो। 'साइबर शिक्षित गांव' के जरिए हम साइबर सुरक्षा को रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बनाना

चाहते हैं। अजुनी हमें याद दिलाता है कि हर नागरिक डिजिटल दुनिया में सुरक्षित रूप से हिस्सा लेने के आत्मविश्वास का हकदार है। अगर हम एक भी परिवार को ऑनलाइन दुनिया में अधिक सुरक्षित महसूस करा पाते हैं, तो यह साइबर खतरों से निपटने में सक्षम और सुरक्षित भारत की दिशा में एक और साक्ष्य कदम होगा।

पहल की शुरुआत में अजुनी गांव की अनुमानित 1,406 आबादी में से 273 घरों का बेसलाइन सर्वे किया गया, जिसमें 675 मोबाइल यूजर्स (539 स्मार्टफोन यूजर्स) की पहचान हुई। सर्वे में गया न्या की 193 घरों में रोजाना इंटरनेट का उपयोग होता है और 155 घर नियमित या कभी-कभी यूपीआई का इस्तेमाल करते हैं।

वाराणसी (उत्तरांचल)। जनपद के राजतालाब आराजी लाइन ब्लॉक क्षेत्र के रामपुर पंचायत भवन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सेवा ही संकल्प' और 'अंत्योदय' के आह्वान से प्रेरित होकर भव्य चौपाल का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य सरकारी योजनाओं को सीधे जनता के द्वार तक पहुँचाना और सामाजिक सरोकारों को मजबूत करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ जनसेवक सदानंद सिंह से पणू पाल उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्लॉक मुख्यालय एवं अप्र प्रासासनिक अधिकारी एवं कमचारी मौजूद रहे। अधिकारियों ने ग्रामीणों को प्रधानमंत्री आवास, आयुष्यान भारत, उज्ज्वला, किसान सम्मान निधि, पसरा सहित अन्य योजनाओं को जानकारी दी और ग्रामीणों की समस्याएँ सुनकर निस्तारण के निर्देश दिए। वक्ताओं ने कहा कि अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुँचाने से ही अंत्योदय साकार होगा। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

बायो-सिनर्जी ने मुंबई में पेश की अपनी डीएनए + एपिजेनेटिक्स किट



मुंबई। यूके के हेल्थ साईंस ब्रांड बायो-सिनर्जी ने आज मुंबई में अपनी डीएनए + एपिजेनेटिक्स किट पेश की। भारत में इसकी मार्केटिंग और डिस्ट्रीब्यूशन कानोरा लाइफ साइंसेज एलएलपी द्वारा किया जाता है। मुंबई में लगभग हर पांच में से एक वयस्क में मेटाबोलिक सिंड्रोम के संकेत पाए जाते हैं। इसमें स्वास्थ्य से जुड़े कई ऐसे कारक एक साथ मौजूद होते हैं, जिनसे डायबिटीज और दिल की बीमारी होने का खतरा बढ़ सकता है। बायो-सिनर्जी की डीएनए + एपिजेनेटिक्स किट इस अहम दौर को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जब लोग समय रहते सही कदम उठाकर लंबे समय तक अपनी

सेहत को बेहतर बनाए रख सकते हैं। आम डीएनए टेस्ट में व्यक्ति की आनुवंशिक जानकारी के बारे में पता चलता है, लेकिन, डीएनए + एपिजेनेटिक्स

किट एपिजेनेटिक जीन मिथाइलेशन को मापती है। इससे पता चलता है कि मौजूदा जीवनशैली, खान-पान और आसपास का वातावरण जीन की गतिविधि और शरीर की जैविक उग्र को किस तरह प्रभावित कर रहे हैं। यह शरीर से जुड़े 300 से ज्यादा मार्कर्स का विश्लेषण करती है और एक विस्तृत रिपोर्ट देती है। इसमें सुधार के लिए हर व्यक्ति की जरूरत के अनुसार जीवनशैली से जुड़े सुझाव दिए जाते हैं। साथ ही, मेटाबोलिक हेल्थ को बेहतर बनाए रखने के लिए कंपनी के अपने रिसर्च से तैयार किए गए न्यूट्रिएटिकल्स भी दिए जाते हैं। यूजर्स के डीएनए से जुड़ी सभी जानकारी पूरी तरह गोपनीय रखी जाती

विश्व डाक दिवस बैनर का उद्घाटन, तंबाकू एवं नशा-मुक्त भारत की अपील



मुंबई। महात्मा गांधी जयंती सप्ताह के अंतिम दिवस, महाराष्ट्र और गोवा के चीफ पोस्टमास्टर जनरल, रामचंद्र जयभाये ने 9 अक्टूबर को होने वाले वर्ल्ड पोस्ट डे से पूर्व, तंबाकू के इस्तेमाल के खिलाफ एक मजबूत संदेश देने वाले जागरूकता बैनर का उद्घाटन किया। यह बैनर, जिस पर कुछ मैसेज जिंदगी बदल देते हैं। अपनी जिंदगी तंबाकू-मुक्त बनाएं लिखा है, NGO वॉइस अगेंस्ट टोबैको ने इंडियाप्रेस से सम्मिलित प्रचारकों से बनाया है। इस पहल का मकसद लोगों को तंबाकू से दूर रहने और एक सेहतमंद, नशा-मुक्त समाज को बढ़ावा देने के लिए पब्लिक मैसेज की ताकतवर पहुंच का इस्तेमाल करना है। इस मौके पर बोलते हुए, जयभाये ने वर्ल्ड पोस्ट डे पर नागरिकों और पूरी पोस्टल बि्रदारी को शुभकामनाएं दीं।

लिए विकसित भारत संकल्प अभियान का जिक्र करते हुए, उन्होंने कहा कि समाज के हर तबके तक यह संदेश पहुंचाने और युवाओं को एक स्वास्थ्य, उत्पादक और नशा-मुक्त भविष्य की ओर ले जाने की जरूरत है।

वॉइस अगेंस्ट टोबैको के फाउंडर उमेश थानावाला ने कहा कि संस्था सभी तरह के तंबाकू पदार्थों के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए निरंतर कार्य काम कर रही हैं और नशा मुक्त भारत के बड़े अभियान में भी सक्रियता से आयोजित कर रही हैं उन्होंने कहा कि तंबाकू-फ्री और ड्रग-फ्री समाज बनाने के लिए लगातार पब्लिक में जानकारी और सबकी हिस्सेदारी जरूरी है। इस मौके पर संतोष कुमार कुलकर्णी असिस्टेंट पोस्टमास्टर एवं आरती थानावाला ने भी हिस्सा लिया। इस उद्घाटन में महान्या गांधी से जुड़े मूल्यां, पोस्टल सर्विस की देश भर में पहुंचे और तंबाकू और नशे के खिलाफ सोशल कैपेन को एक साथ लाया गया, जिससे वर्ल्ड पोस्ट डे के सेलिब्रेशन को एक मतलब वाला पब्लिक-अवेयरनेस डायमेशन मिला। इस आयोजन में सहायक निदेशक, डाक सेवाएं संतोष कुमार कुलकर्णी एवं आरती थानावाला शामिल थे।

गणेशपुरी में सोलर वॉटर हीटर डोनेशन कार्यक्रम में शामिल हुए डॉ. सांवरा



पालघर। गणेशपुरी, पालघर स्थित नंदनी-गांगोथा, कलमबाई, गणेशपुरी-गोलसाई रोड पर अरविंद स्मृति द्वारा संचालित एडेड प्राइमरी एवं सेकेंडरी आश्रम स्कूल में सोलर वॉटर हीटर डोनेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. सांवरा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। यह कार्यक्रम लायंस

क्लब ऑफ वसई पर्स की ओर से लायंस क्लब ऑफ मुंबई महावीर नगर और स्पोर्ट्सलायंस फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित किया गया। इस दौरान आश्रम स्कूल के विद्यार्थियों के लिए 3500 लीटर क्षमता वाला सोलर वॉटर हीटर दान किया गया। इस पहल के माध्यम से आश्रम स्कूल के विद्यार्थियों की सौर ऊर्जा से संचालित वॉटर हीटर की सुविधा उपलब्ध कराई गई। दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ आवश्यक बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना बेहद महत्वपूर्ण है। ऐसे में सामाजिक एवं चैरिटेबल संस्थाओं द्वारा की जा रही इस तरह की पहल निश्चित रूप से सराहनीय है। सौर ऊर्जा के माध्यम से विद्यार्थियों को साफ और गर्म पानी की सुविधा मिलने के साथ ही

पर्यावरण संरक्षण तथा नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को भी बढ़ावा मिलेगा। विद्यार्थियों की दैनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए की गई यह सहायता उनके स्वास्थ्य और सुविधा की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

कार्यक्रम में लायंस क्लब के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन नटवर बाका, फर्स्ट डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन विकास सराफ और सेकंड डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन सुनील लावटी सहित लायंस क्लब के पदाधिकारी एवं सदस्य, गणमान्य नागरिक तथा आश्रम स्कूल के शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए शिक्षा और आवश्यक सुविधाओं को बढ़ावा देने वाली ऐसी सामाजिक पहलों को आगे भी जारी रखने पर जोर दिया।

वैश्विक शिखर सम्मेलन में विशेषज्ञों ने तंबाकू की लत और जनस्वास्थ्य नीति को आकार देने में विज्ञान की भूमिका पर किया विचार-विमर्श

मुंबई। 28 सितंबर से 30 सितंबर तक वंचुअल माध्यम से टोबैको हार्म रिडक्शन पर 9वीं सत्रिक का आयोजन किया गया, जिसमें क्लिनशियर्स, रिसर्चर्स और पॉलिसी एक्सपर्ट्स ने टोबैको की लत, इस दिशा में मिल रहे वैज्ञानिक प्रमाणों और टोबैको कंट्रोल के उपायों के बारे में चर्चा की। यह चर्चा सिगरेट की रोकथाम, युवाओं को तंबाकू और निकोटिन के सेवन से बचाने तथा पब्लिक पॉलिसी बनाने में वैज्ञानिक प्रमाणों की भूमिका पर केंद्रित थी। सिगरेट पीने वाली को इसे छोड़ने में जिन दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, उनके बारे में बात करते हुए पद्म श्री प्रो. मोहसिन वली, सीनियर कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसीन, पैसिफिक वनहेल्थ, नई दिल्ली और फार्माडिंग मैबर, डॉक्टर ऑफ एडिक्शन (डीएएडी) ने बताया कि टोबैको कंट्रोल का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए क्लिनिकल वास्तविकताओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा, ह्यूमनसिगरेट पीने वाले हर व्यक्ति को इसे छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना और इसमें उन्हें सहयोग देना जरूरी है। पर अपने चालीस सालों से अधिक के क्लिनिकल अनुभव में मैंने देखा है कि सिगरेट पीने वालों को इसे छोड़ने के लिए कहना और उन्हें इसकी लत छोड़ने में मदद करना दो अलग-अलग चीजें हैं। मेरे ज्यादातर मरीज जो सिगरेट या बीड़ी छोड़ना चाहते हैं, उन्हें इसमें काफी दिक्कत का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थितियों में एक फिजिशियन की जिम्मेदारी होती है कि वो इस मामले में उपलब्ध वैज्ञानिक प्रमाणों पर निष्पक्ष रहते हुए गौर करें और इस बात को समझें कि क्या अलग-अलग निकोटिन प्रोडक्ट्स के जोखिम अलग-अलग हो सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि बच्चों और सिगरेट न पीने वालों को इसकी आदत शुरू करने और इसके एक्सपोजर से बचाया जाए। लेकिन सिगरेट पीने वाले व्यक्तियों को सही व संतुलित जानकारी उपलब्ध कराना और उन्हें टोबैको के सबसे ज्यादा खतरनाक रूपों से बचने में मदद करना भी उतना ही जरूरी है। जैसे-जैसे नए प्रमाण सामने आ रहे हैं, हमारी पॉलिसीज की भी उन्हीं के अनुसार समय-समय पर समीक्षा करनी रहनी जरूरी हो गयी है, ताकि पब्लिक हेल्थ के निर्णय वैज्ञानिक आधार पर लिए जा सकें। इस सभित में निकोटिन और पारंपरिक टोबैको के इस्तेमाल के कारण स्वास्थ्य को होने वाले खतरों के बीच अंतर भी विस्तृत चर्चा की गई। नील एल. बेनोविजिन, प्रोफेसर एमिरेटस ऑफ मेडिसीन, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सैन फ्रांसिस्को ने निकोटिन के फामेकोलॉजिकल प्रभावों, लत, कार्डियोवैस्कुलर प्रभावों और इसके एक्सपोजर के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि इन सभी मामलों में वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर अलग-अलग गौर किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, ह्यूमनिकोटिन और सिगरेट एक ही चीज नहीं हैं। स्वास्थ्य पर इन दोनों के असर को समझने के लिए हमें निकोटिन के फामेकोलॉजिकल प्रभावों और टोबैको के जलने से होने वाले बड़े नुकसानों के बीच का अंतर समझना होगा। निकोटिन अपना आदी बना देता है। हृदय की धड़कन, ब्लड प्रेशर और रक्तवाहिनियों के सिकुड़ने पर इसके असर को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। लेकिन इसके साथ

सेवा ज्योति यात्रा नालासोपारा में जोश भरे माहौल में सम्पन्न



नालासोपारा। सेवा ज्योति अभियान के तहत नालासोपारा ईस्ट में मजोठिया नाट्यगृह से गाला नगर सर्कल तक भव्य यात्रा निकाली गई। सेवा, सम्पन्न और जनकल्याण के संदेश के साथ आयोजित इस यात्रा को स्थानीय नागरिकों का उत्साहपूर्ण समर्थन मिला। यात्रा के माध्यम से समाज के हर वर्ग तक सेवा के माध्यम से सहने और जनकल्याण के संकल्प को आगे बढ़ाने का आह्वान किया गया।

इंदौर में पैकड घी के नाम पर 'जहर', 96 में से 28 सैंपल फेल



जांच में पकड़ा मिलावटी घी। -एआई इमेज

प्रणित नरेंद्र तिवारी इंदौर (उत्तरशक्ति)। शहर में बिक रहे पैकेड घी की जांच में खाद्य सुरक्षा विभाग को मिलावट के साथ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सीसा भी मिला है। जुलाई से सितंबर के दौरान जांचे गए घी के 28 सैंपल फेल हुए। इनमें 24 असुरक्षित और 4 अवमानक पाए गए। असुरक्षित सैंपलों में से 16 की सीसा जांच हुई, जिनमें 10 में इसकी मात्रा तय सीमा से ज्यादा मिली। इन 10 सैंपलों में सीसे की मात्रा 0.10 से 0.21 mg/kg तक रही, जबकि स्वीकार्य सीमा 0.02 mg/kg है। यानी सीसा 5 से 10.5 गुना तक ज्यादा मिला। इन 24 असुरक्षित सैंपलों से करीब 17 हजार लीटर घी का स्टॉक जुड़ा है।

विश्व दृष्टि दिवस के अवसर पर ठाणे में डॉ अग्रवाल आइ हॉस्पिटल ने आयोजित किया वॉकआउट

ठाणे। विश्व दृष्टि दिवस के अवसर पर डॉ. अग्रवाल आइ हॉस्पिटल, ठाणे की ओर से आंखों की देखभाल और नियमित नेत्र जांच के महत्व के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए वॉकआउट का आयोजन किया गया। इस पहल में छात्रों, स्वयंसेवकों और स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। वॉकआउट की शुरुआत सुबह 8 बजे ठाणे के तीन हाथ नका स्थित डॉ. अग्रवाल आइ हॉस्पिटल के केंद्र से हुई। छात्रों ने अस्पताल की टीम के साथ मिलकर लोगों तक आंखों की देखभाल और नियमित नेत्र जांच का संदेश पहुंचाया। ठाणे क्षेत्र में डॉ. अग्रवाल आइ हॉस्पिटल की ओर से आयोजित यह पहल जागरूकता कार्यक्रम था। इस अवसर पर महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य रवींद्र फाटक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। वॉकआउट के माध्यम से लोगों को आंखों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने और नियमित रूप से आंखों की जांच कराने का संदेश दिया गया। लोगों की भागीदारी के माध्यम से आंखों की देखभाल के महत्व को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने और उन्हें अपने आंखों के स्वास्थ्य के प्रति सजग बनाने का प्रयास किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य रवींद्र फाटक ने कहा, यह पहल डॉ. अग्रवाल आइ हॉस्पिटल के ह्साइट फॉर ऑल के उद्देश्य को दर्शाती है, जिसके तहत अधिक से अधिक लोगों तक अच्छी और बेहतर नेत्र चिकित्सा सेवाएं पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। आंखों की देखभाल और समय पर जांच के प्रति लोगों को जागरूक करना इस पहल का मुख्य उद्देश्य है। विश्व दृष्टि दिवस के अवसर पर डॉ. अग्रवाल आइ हॉस्पिटल, ठाणे की ओर से पूरे अक्टूबर महीने में आम नागरिकों के लिए निःशुल्क आंखों की जांच और डॉक्टर से परामर्श की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इस पहल का उद्देश्य लोगों को नियमित नेत्र जांच और आंखों की रोकथाम संबंधी देखभाल को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करना तथा आंखों से जुड़ी संभावित समस्याओं का समय रहते पता लगाने में मदद करना है।

कांडला पोर्ट बनेगा ग्रीन हाइड्रोजन और स्वच्छ ऊर्जा का नया वैश्विक केंद्र

मुंबई। भारत के प्रमुख समुद्री द्वारों में से एक, दीनदयाल पोर्ट अथॉरिटी (डीपीए), कांडला ने अंकरिंग मैरीटाइम डीकाबोनाइजेशन (समुद्री क्षेत्र को कार्बन-मुक्त बनाना) विषय पर 'कांडला फोरम 2026' का भव्य आयोजन किया। ज्ञान साझा करने और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देने वाले इस ऐतिहासिक सत्र पर दुनिया भर के स्वच्छ ऊर्जा, हाइड्रोजन, शिपिंग, जहाज निर्माण, इंजीनियरिंग और वित्तीय क्षेत्र के शीर्ष दिग्गज एक साथ आए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में 2070 तक भारत के 'नेट जीरो' के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में डीपीए कांडला तेजी से कदम बढ़ा रहा है। अपने विकासित हो रहे ग्रीन हाइड्रोजन और स्वच्छ ईंधन कोइसिस्टम के माध्यम से कांडला स्वयं को हरित ऊर्जा, टिकाऊ शिपिंग और मैरीटाइम डीकाबोनाइजेशन के एक प्रमुख वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है। इस फोरम में अंतरराष्ट्रीय 'हाइड्रोजन काउंसिल' की 62 सदस्य कंपनियों का प्रतिनिधिमंडल ने वाले 200 से अधिक वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारियों के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। इनमें इलेक्ट्रोलाइजर व उपकरण निमाता, ऊर्जा व औद्योगिक गैस क्षेत्र की दिग्गज कंपनियां, इंजीनियरिंग व ईपीसी कंपनियां, मोबिलिटी निमाता, शिपिंग व समुद्री संगठन, क्लासिफिकेशन निकाय और प्रोजेक्ट फाइनेंसिंग संस्थान शामिल थे। इनके साथ ही भागीदारी निमाता, डेवलपर्स, ऑफ-टेकरर्स और वित्तीय संस्थानों के प्रमुखों ने भी भागीदारी की। दीनदयाल पोर्ट अथॉरिटी, कांडला के अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह ने वैश्विक उद्योग प्रतिनिधिमंडल के साथ कांडला के ग्रीन हाइड्रोजन व डेरिवेटिव इंफ्रास्ट्रक्चर की रूपरेखा साझा की। उन्होंने पोर्ट के पास उपलब्ध बिजली, पानी, भूमि, मेथनॉल बंकरिंग सुविधाओं और संयुक्त उद्यमों की संभावनाओं को रेखांकित किया। दीनदयाल पोर्ट अथॉरिटी के अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह ने कहा, रहम दुनिया भर के उद्योग जगत के लीडर्स को कांडला के हरित परिवर्तन में भागीदार बनने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमारा उद्देश्य पोर्ट और उद्योग के बीच केवल संचाद तक सीमित न रहकर टोस और व्यावहारिक परियोजनाओं के रूप में साझेदारी को जमीनी स्तर पर उतारना है।

NABVENTURES ने फंड II की पहली क्लोजिंग रु. 450 करोड़ पर पूरी की

मुंबई। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की वेंचर कैपिटल शाखा NABVENTURES ने NABVENTURES Fund II की पहली क्लोजिंग सफलतापूर्वक पूरी करने की घोषणा की है। इस फंड के लिए 450 करोड़ रुपये की निवेश प्रतिबद्धताएं प्राप्त हुई हैं। अपने पिछले फंडों के मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड के आधार पर, जिन्होंने सामूहिक रूप से 23 नवोन्मेषी उद्यमों को समर्थन दिया है, यह फंड ग्रीन-शू विलकल्प सहित कुल 1,500 करोड़ रुपये का कोष जुटाने का लक्ष्य लेकर चल रहा है। Fund II में वेंचर निवेशक के रूप में नाबार्ड भारत की कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नवाचार-आधारित विकास को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता को लगातार दोहरा रहा है। यह फंड ऐसे आशाजनक शुरुआती और विकास चरण के उद्यमों को सहयोग प्रदान करेगा, जो प्रौद्योगिकी, विस्तार योग्य व्यावसायिक मॉडल और टिकाऊ समाधानों का लाभ उठाकर कृषि मूल्य श्रृंखला और ग्रामीण बाजारों से जुड़ी महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान कर रहे हैं।

दिग्गज क्रिकेटरों के साथ दिग्गज कहानियां: पिच से लेकर लॉकर रूम तक



मुंबई। कुछ क्रिकेट की कहानियां इतिहास की किताबों में दर्ज होने के लिए होती हैं, जबकि कुछ कहानियां कुछ ठहाकों के साथ सुनाने के लिए बेहतरी होती हैं। नेटफिल्क्स के द ग्रेट इंडियन कपिल शो सीजन 5 में सुनील गावस्कर और रवि शास्त्री, कपिल शर्मा के साथ इस हंसी के त्यो-हा-हा-हार में साथ नजर आएंगे, जहां एक ऐसी शाम देखने को मिलेगी, जिसमें

पूछते हैं कि वह हमेशा बिना हेलमेट के कैसे खेलते थे। सिद्ध बताते हैं कि उन्होंने अपने भते के पैसे से एक बहुत बड़ा हेलमेट खरीदा था, वहीं गावस्कर करीब 150 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करने वाले गेंदबाजों का निडर होकर सामना करते थे और मजाकिया अंदाज में कहते हैं, ह्यूअंदर भेजे में कुछ नहीं था। गावस्कर के लिए भारत के लिए खेलना हमेशा सम्मान की बात रही। इसके बाद सिद्ध भारत के लिए अपने चयन को याद करते हैं, जब वह 18 साल के थे, और उस समय को भी याद करते हैं जब उन्होंने तत्कालीन कप्तान रवि शास्त्री के साथ कमरा साझा किया था। तभी वह अचानक शास्त्री को किसी के साथ देखकर कर्म में पहुंच गए और उन्हें बार-बार बाहर जाने के लिए कहा गया—जिससे एक बेहद मजेदार खुलासा सामने आता है।

मुंबई-ठाणे के 10 खास दुर्गा पूजा पंडाल, जहाँ परंपरा और उत्सव का दिखेगा सुंदर मेल

मुंबई। मुंबई में दुर्गा पूजा का अपना एक खास अंदाज है। यहाँ के पंडाल अपनी पुरानी परंपराओं, पूजा-विधियों, खास मूर्तियों, सुंदर सजावट और सामुदायिक जुड़ाव के लिए जाने जाते हैं। कुछ पूजा समितियाँ कई दशकों से यह परंपरा निभा रही हैं, तो कुछ का जुड़ाव फिल्मी सितारों से है। वहीं, कई नई समितियाँ भी मिलकर इस त्योहार को खास बनाती हैं। आइए जानते हैं मुंबई के कुछ प्रसिद्ध दुर्गा पूजा पंडालों के बारे में।



बॉम्बे दुर्गावाड़ी समिति मुंबई की सबसे पुरानी दुर्गा पूजा समितियों में से एक है। इसकी शुरुआत वर्ष 1930 में हुई थी। यह समिति बंगाल की पारंपरिक पूजा-विधियों को आज भी सहेजकर रखे हुए है। यहाँ माँ दुर्गा की मूर्ति खास तौर पर कोलकाता के एक कलाकार द्वारा बनाई जाती है, जिसमें देवी के पारंपरिक रूप का ध्यान रखा जाता है। नौ दशक से अधिक समय पूरा कर चुकी यह पूजा आज भी मुंबई की प्रमुख पारंपरिक दुर्गा पूजाओं में गिनी जाती है। माटुंगा स्थित एसएनडीटी महिला कॉलेज में होई चोई आनंदे फाउंडेशन की दुर्गा पूजा

इस साल खास आकर्षण का केंद्र रहने वाली है। वर्ष 2026 की पूजा में पारंपरिक बंगाली रीति-रिवाजों के साथ मनोरंजन का भी खास ध्यान रखा गया है। इस आयोजन का एक बड़ा आकर्षण प्रसिद्ध गायक जावेद अली की लाइव प्रस्तुति है, जो उत्सव में संगीत का रंग जोड़ेगी। पूजा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और लाइव मनोरंजन का मेल इस आयोजन को मुंबई की दुर्गा पूजा के खास आयोजनों में शामिल करता है। नवी मुंबई बंगाली एसोसिएशन वर्ष 1981 से दुर्गा पूजा का आयोजन कर रही है। इस पूजा की खास बात यह है कि यहाँ धार्मिक आयोजन के साथ बड़े स्तर पर

नॉर्थ बॉम्बे सर्वोच्च निजिक दुर्गा पूजा 2026 की घोषणा की ऑफिशियल प्रेस रिलीज



मुंबई। मुंबई आस्था, संस्कृति और परंपरा के एक और शानदार जश्न का गवाह बनने के लिए तैयार है, क्योंकि नॉर्थ बॉम्बे सर्वोच्च निजिक दुर्गा पूजा अपने शानदार 80वें एडिशन के साथ वापस आ रही है। 1948 में शुरू हुई यह पूजा मुंबई के सबसे खास दुर्गा पूजा सेलिब्रेशन में से एक बन गई है, जो बंगाली कल्चर में गहराई से जुड़ी विरासत को आगे बढ़ाती है और अलग-अलग कम्युनिटी से आने वाले भक्तों और विजिटर्स का स्वागत करती है। हर दिन हजारों भक्तों के एक साथ आने से, यह सेलिब्रेशन पुराने रीति-

रिवाजों को उस स्केल और वाइब्रेंसी के साथ मिलाता रहता है जो नॉर्थ बॉम्बे पूजा की पहचान बन गई है। पंडाल की शान और पारंपरिक माँ दुर्गा प्रतिमा से लेकर भोग, कल्चरल फेस्टिवल और कम्युनिटी सेलिब्रेशन तक, यह पूजा मुंबई के फेस्टिव कैलेंडर का एक ऐसा हिस्सा है जिसका बेसब्री से इंतजार रहता है। इस साल, पंडाल केरल के गुरु वायु मंदिर की शानदार आभा को फिर से बनाएगा, जो भगवान विष्णु की सम्प्रति सबसे पवित्र मंदिरों में से एक है। आर्किटेक्चरल रीक्रिएशन में बारीक कारीगरी, पारंपरिक डिटेल्स

पालघर में धान खरीद और वेयरहाउसिंग के लंबित मुद्दों को लेकर मंत्री छगन भुजबल से मिलीं विधायक स्नेहा दुबे पंडित



मुंबई। पालघर जिले में धान उत्पादक किसानों, आदिवासी सेवा संस्थाओं, मिल मालिकों और गोदाम मालिकों से जुड़े लंबित मुद्दों को लेकर वसई की विधायक स्नेहा दुबे पंडित ने मंत्रालय, मुंबई में महाराष्ट्र के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री छगन भुजबल से मुलाकात की। मंत्री छगन भुजबल की अध्यक्षता में राज्य के विभिन्न जिलों में सपोर्ट प्राइस खरीद योजना के तहत धान खरीद और वेयरहाउसिंग से जुड़े लंबित

मामलों को लेकर बैठक आयोजित की गई। बैठक में विधायक स्नेहा दुबे पंडित ने पालघर जिले से संबंधित विभिन्न समस्याओं को प्रमुखता से उठाया। विधायक ने मांग की कि खरीद सीजन 2021-22 और 2022-23 के धान वेयरहाउसिंग का लंबित भुगतान जल्द किया जाए। साथ ही धान के वास्तविक भंडारण की अवधि को ध्यान में रखते हुए कटौती और गोदाम किराए के संबंध में उचित निर्णय लेने तथा पूर्व अवधि के पात्र एवं लंबित गोदाम किराए का भुगतान जांच के बाद शीघ्र करने की मांग रखी। उन्होंने धान कटौत के लिए वितरित किए गए खराब अनाज के संबंध में भी उचित प्रक्रिया तय करने और संबंधित संस्थाओं अथवा मिलर्स से बिना अनुचित कटौती के समाधान निकालने की मांग की। बैठक में पालघर जिले के आदिवासी जंगल पट्टेदारों की समस्याओं पर अलग से बैठक आयोजित करने की मांग भी विधायक ने रखी। उन्होंने कहा कि जिले में बड़ी संख्या में आदिवासी जंगल पट्टेदार अपनी आजीविका के लिए खेती के मौसम पर निर्भर हैं, इसलिए उनके मुद्दों को प्राथमिकता के आधार पर हल किया जाना आवश्यक है। बैठक में यह भी सामने आया कि योजना से संबंधित कुछ सरकारी स्तर पर लंबित हैं। इस संबंध में आवश्यक फॉलो-अप करने तथा पालघर जिले में धान खरीद और कटौत से जुड़े मुद्दों पर जल्द अलग बैठक आयोजित करने का आश्वासन दिया गया। बैठक में प्रफुल्ल पटेल सहित विधायक सुशील मुनगटोवार, नाना पटोले, परिणय फुके, विनोद अग्रवाल, अविनाश ब्रह्मणकर, कृष्ण गवजे, रामदास मससम, विजय रहांडोले, राजकुमार बडोले सहित अन्य जनप्रतिनिधि, विभागीय सचिव एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। विधायक स्नेहा दुबे पंडित ने कहा कि पालघर जिले के किसानों, आदिवासी समुदाय, आदिवासी सेवा संस्थाओं, मिल मालिकों और गोदाम मालिकों से जुड़े इन मामलों के समाधान के लिए उनका फॉलो-अप आगे भी जारी रहेगा।